SIRATE ABU DARDA (HINDI)

साहिबे इल्मो हिक्मत सय्यिदुना अबू दरदा رضی اللہ عنہ की

सीरत के मुख़्तलिफ़ पहलूओं पर मुश्तमिल म-दनी गुलदस्ता

رضی اللہ تعالیٰ عنہ

सीरते अबू दरदा

सय्यिदुना अबू दरदा और घर का म-दनी माहौल 10

सय्यिदुना अबू दरदा का शौक़े इबादत 17

सय्यिदुना अबू दरदा और नेकी की दा'वत का जज़्बा 28

सय्यिदुना अबू दरदा की तीन महबूब चीज़ें 40

सय्यिदुना अबू दरदा की इल्म से महब्बत 44

सय्यिदुना अबू दरदा की करामात 59

مکتبۃ المدینہ
(دعوتِ اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जे़ल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाजे़ खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुजु़र्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

सीरते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

येह रिसाला (**सीरते सय्यिदुना अबू दरदा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ)

मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है, इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद, गुजरात।

MO. 09374031409

E-mail : maktabahind@gmail.com

याद दाश्त

दौराने मुत़ा-लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

साहि़बे इ़ल्मो हि़क्मत **सय्यिदुना अबू दरदा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सीरत के मुख़्तलिफ़ पहलूओं पर मुश्तमिल म–दनी गुलदस्ता

सीरते सय्यिदुना अबू दरदा

पेशकश

मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

नाशिर

मक–त–बतुल मदीना अह़मदआबाद

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَاحَبِیْبَ اللہ

नाम बयान : सीरते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ
पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)
सिने त़बाअ़त : र-जबुल मुरज्जब 1432 हि.
नाशिर : मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

मुम्बई : 19,20, मुह़म्मद अ़ली रोड,
मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने,
मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद,
देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : गरीब नवाज मस्जिद के सामने, सेफी नगर रोड,
मोमिनपूरा, नागपूर, (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19 / 216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार,
स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर : 0145 2629385

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,
अह़मदआबाद, गुजरात। MO. 09374031409
E-mail : maktabahind@gmail.com
www.dawateislami.net

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

''सीरते अबू दरदा'' के 12 हुरूफ़ की निस्बत से इस रिसाले को पढ़ने की ''12 निय्यतें''

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ

मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (المعجم الکبیر، الحدیث: 5942، ج6، ص185)

दो म-दनी फूल :

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बाह ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़ा पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इ़बारात पढ़ लेने से इन निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ रिज़ाए इलाही के लिये इस रिसाले का अव्वल ता आख़िर मुता़-लआ़ करूंगा ﴾6﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुता़-लआ़ करूंगा ﴾8﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा ﴾10﴿ जहां जहां ''**अल्लाह**'' का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और जहां जहां ''**सरकार**'' का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा ﴾11﴿ इस ह़दीसे पाक ''تَهَادَوْا تَحَابُّوْا'' एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالک، الحدیث: ۱۷۳۱، ج۲، ص۴۰۷) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह रिसाला ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा ﴾12﴿ किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी तौ़र पर मुत्त़लअ़ करूंगा (नाशिरीन को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बता देना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

सीरते सय्यिदुना अबू दरदा
رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : **''जुमुआ़ के दिन मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ा करो, येह यौमे मश्हूद है, इस में फ़िरिश्ते ह़ाज़िर होते हैं, जो बन्दा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है उस का दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है यहां तक कि वोह दुरूद पढ़ने से फ़ारिग़ हो जाए ।''** सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : ''وَبَعْدَ الْمَوْتِ؟'' या'नी क्या आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इस दुन्यावी ज़िन्दगी से पर्दा फ़रमाने के बा'द भी ? इर्शाद फ़रमाया : ''وَبَعْدَ الْمَوْتِ'' हां मेरे इस दुन्या से जाने के बा'द भी । क्यूं कि ''اِنَّ اللّٰہَ حَرَّمَ عَلَی الْاَرْضِ اَنْ تَاْکُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِیَاءِ'' **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन पर**

येह बयान मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी व निगराने मर्कज़ी मजलिसे शूरा ह़ाजी मुह़म्मद इ़मरान अ़त्तारी سَلَّمَہُ الْبَارِی ने तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के अ़ज़ीमुश्शान सुन्नतों भरे बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ 29 जुमादल अव्वल सि. 1428 हि. में फ़रमाया । ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े के साथ पेश किया जा रहा है ।

ह़राम किया है कि वोह अम्बियाए किराम के जिस्मों को खाए बल्कि "فَنَبِیُّ اللّٰہِ حَیٌّ یُّرۡزَقُ" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी ज़िन्दा हैं और रिज़्क़ दिये जाते हैं।

(سنن ابن ماجه، کتاب الجنائز، باب ذکر وفاته و دفنه صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم، الحدیث:1636، ج2، ص290)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सीरते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ

मदीनए मुनव्वरह पर जब शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के जल्वों की बरसात छमाछम बरसी और नेकी की दा'वत का पैग़ाम आ़म होने लगा तो इस की आवाज़ सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने भी सुनी और आख़िर कार वोह इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत को दिलो जान से तस्लीम करते हुए दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गए।

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ जब मुसल्मान हुए और इन्हों ने जाना कि इस्लाम ख़ैर ख़्वाही का दर्स देता है। और ह़क़ीक़ी ईमान वाला बन्दा वोही है जो अपने भाई के लिये भी वोही पसन्द करे जो अपने लिये पसन्द करता है तो आप सोचने लगे कि वोह ख़ुद तो जहन्नम की आग का ईंधन बनने से बच गए हैं मगर इन के भाई **उ़वैमिर** अभी तक कुफ़्र की तारीकियों में भटक रहे हैं। चुनान्चे

आप ने अपने भाई **उ़वैमिर** पर इन्फ़िरादी कोशिश शुरूअ़ कर दी, आप का नेकी की दा'वत पेश करने का अन्दाज़ बड़ा ह़कीमाना और प्यारा था। आख़िर कार ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की इन्फ़िरादी कोशिश, ह़िक्मत भरे अन्दाज़ और मुसल्सल नेकी की दा'वत की ब-र-कत से उन के भाई **उ़वैमिर** ने इस्लाम क़बूल कर लिया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं :

ह़ज़रते **उ़वैमिर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के इस्लाम लाने का सबब कुछ यूं पैदा हुवा कि आप अपने भाई ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के मुसल्सल नेकी की दा'वत पेश करने से मु-तअस्सिर ज़रूर थे मगर अभी तक आप ने इस्लाम क़बूल न किया था। आप ने अपने घर में एक बुत रखा हुवा था जिस पर आ़म त़ौर पर कपड़ा डाल देते। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को येह बात मा'लूम थी। चुनान्चे, एक दिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ उस वक़्त सय्यिदुना **उ़वैमिर** के घर तशरीफ़ लाए जब वोह घर में मौजूद न थे। आप के पूछने पर उन की ज़ौजा से मा'लूम हुवा कि वोह घर पर मौजूद नहीं। तो आप उस कमरे में चले गए जहां ह़ज़रते **उ़वैमिर** ने बुत रखा हुवा था। आप के पास उस वक़्त एक कुल्हाड़ा था जिस से आप ने उस बुत को तोड़ना शुरूअ़ कर दिया और उस के साथ साथ आप ऐसे अश्आ़र पढ़ते जाते जिन में शैत़ान की बुराइयों का तज़्किरा था और साथ ही येह फ़रमाते जाते कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं।

ह़ज़रते **उ़वैमिर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ज़ौजा ने जब तोड़ फोड़ की आवाज़ें सुनीं तो भागते हुए आईं और जब ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को बुत तोड़ते देखा तो कहने लगीं : "ऐ इब्ने रवाह़ा ! येह आप ने क्या किया ? आप ने तो मुझे हलाक व बरबाद कर दिया है।" मगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने कोई परवाह न की और उसे रोते हुए छोड़ कर वहां से चल दिये।

ह़ज़रते **उ़वैमिर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ घर वापस आए और बीवी को रोते हुए देख कर रोने का सबब पूछा। जब उस ने बताया कि आप के जाने के बा'द **अ़ब्दुल्लाह** बिन रवाह़ा तशरीफ़ लाए थे और येह देखें उन्हों ने क्या किया है ? तो येह देख कर आप ग़ज़ब नाक हो गए। लेकिन थोड़ी देर बा'द दिल में ख़याल

पैदा हुवा कि अगर बुत के पास कोई भलाई होती तो यक़ीनन अपनी हिफ़ाज़त ख़ुद कर लेता। पस इस ख़याल का आना था कि दिल की हालत ही बदल गई और फ़ौरन बारगाहे नुबुव्वत में हाज़िर हो कर इस्लाम क़बूल कर लिया।

(المستدرك، ذكر مناقب أبي الدّرداء عويمر بن زيد الأنصاري رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ، باب ذكر اسلام ابي الدرداء رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ، الحديث: 5500، ج4، ص404 مفهومًا)

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन रवाहा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का नेकी की दा'वत पेश करने का क्या ही प्यारा अन्दाज़ था। इस से हमें येह म-दनी फूल मिलता है कि जब कोई इस्लामी भाई ख़ुद म-दनी माहोल से वाबस्ता हो कर म-दनी रंग में रंग जाए तो उसे कोशिश करनी चाहिये कि उस के दोस्त अहबाब भी इस महके महके मुश्कबार म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाएं ताकि वोह भी उस की तरह दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो कर नेकी की दा'वत आ़म करने और बुराइयों के ख़िलाफ़ जंग में हिस्सा लेने के अ़ज़ीम काम में शरीक हो जाएं और दा'वते इस्लामी का येह अ़ज़ीम म-दनी मक़्सद हर वक़्त उन की ज़बानों पर रहे :

मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है। اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

इस अ़ज़ीम म-दनी मक़्सद का अ-मली नुमूना बनने के लिये हमें म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल और म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना होगा। इस की ब-र-कत से हम सिर्फ़ अपनी ही नहीं बल्कि अपने घर वालों की इस्लाह का भी ज़रीआ़ बनेंगे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे और प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने हज़रते सय्यिदुना **उ़वैमिर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के इस्लाम लाने का वाक़िआ़ तो जान

लिया मगर क्या आप जानते हैं कि येह किस क़दर अ़ज़ीम सह़ाबी हैं ? तो जान लीजिये कि इन्हें सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के नाम से जाना जाता है । चुनान्चे,

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡحَنَّان **''मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़''** में फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते अबू दरदा का नाम **उ़वैमिर बिन आ़मिर** है अन्सारी ख़ज़्रजी हैं। दरदा आप की बेटी का नाम है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ बड़े आ़लिम फ़क़ीह थे । सि. 32 हि. में दिमश्क़ में वफ़ात पाई । (مراۃ المناجیح، کتاب المناقب، ج8، ص548)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वा'दा :

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ऐसे आ़शिक़े रसूल हैं कि आप के मुसल्मान हो जाने का वा'दा ख़ुद रब्बुल इ़ज़्ज़त ने अपने मह़बूब ताजदारे रिसालत, माहे नुबुव्वत, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से फ़रमाया था । चुनान्चे,

एक मरतबा हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस बात का इज़्हार करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से अबू दरदा के मुसल्मान हो जाने का वा'दा फ़रमाया और आख़िर कार वोह मुसल्मान हो गए ।

(تاریخ دمشق، الرقم 5464 عویمر بن زید بن قیس، ج47، ص105)

सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ और घर का म-दनी माह़ोल :

मीठे मीठे और प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! कितनी अ़-ज़मत की बात है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ जब म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दामने करम से वाबस्ता हुए तो न सिर्फ़ ख़ुद म-दनी रंग में रंग गए बल्कि आप के घर वाले भी म-दनी माह़ोल की ब-र-कतों से

मह़रूम न रहे। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के घर में ऐसा म-दनी माह़ोल था कि सारा घराना ही तक़्वा व परहेज़ गारी का अ़-मली नुमूना था। घर में सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मीठी व प्यारी सुन्नतों पर अ़मल का ऐसा जज़्बा पैदा हो गया कि सब के सब सुन्नतों के अ़-मली मुबल्लिग़ बन गए। और आप ने अपने घर वालों को दुन्या और इस से बे रग़्बती का ऐसा दर्स दिया कि उन के दिलों से दुन्या और माले दुन्या की मह़ब्बत ख़त्म हो गई। चुनान्चे,

सय्यिदुना अबू दरदा की शहज़ादी की शादी :

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की शहज़ादी के बारे में दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती §Î ¶Ú **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 413 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**उ़यूनुल ह़िकायात** (मुतर्जम)" सफ़ह़ा 351 पर है : यज़ीद बिन मुआ़विया ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को पैग़ाम भेजा कि अपनी साह़िब ज़ादी का निकाह़ मुझ से कर दें। मगर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इन्कार फ़रमा दिया। फिर एक ग़रीब शख़्स (सफ़्वान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन सफ़्वान बिन उमय्या अल जुमह़ी) ने निकाह़ का पैग़ाम भिजवाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने क़बूल फ़रमा लिया और अपनी साह़िब ज़ादी का निकाह़ उस ग़रीब शख़्स से कर दिया।

लोगों में येह बात मश्हूर हो गई कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अपनी साह़िब ज़ादी के लिये ह़ाकिमे वक़्त के बेटे का रिश्ता ठुकरा दिया और एक ग़रीब शख़्स से अपनी साह़िब ज़ादी का निकाह़ कर दिया। जब लोगों ने इस की वजह पूछी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : "मैं ने अपनी बेटी दरदा की बेहतरी सोची है तुम उस वक़्त दरदा के बारे में क्या सोचते जब

एक दुन्या दार बादशाह उस का शोहर होता और वोह ऐसे घर में रहती जिस में उस की नज़रें चका चौंध (या'नी अन्धी) हो जातीं तो क्या उस का दीन सलामत रहता ?''

(الزھد للامام احمد بن حنبل، باب زھد ابی الدّرداء، الحدیث:761، ص165)

سُبۡحٰنَ اللّٰہ ! सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की म-दनी सोच पर क़ुरबान जाइये ! कि ह़ाकिम के बेटे का रिश्ता ठुकरा रहे हैं और एक हम हैं कि अपनी बेटी की शादी करते वक़्त येह भी नहीं देखते कि लड़का नमाज़ी और आ़शिक़े रसूल है कि नहीं ? येह तो मा'लूम करते हैं कि माहाना आमदनी कितनी है ? मगर येह नहीं पूछते कि आमदनी का ज़रीआ़ क्या है ? चुनान्चे,

लड़का कैसा होना चाहिये ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब कोई ऐसा शख़्स तुम्हें निकाह़ का पैग़ाम दे जिस का दीन और अख़्लाक़ तुम्हें पसन्द हो तो उस से (फ़ौरन अपनी लड़की का) निकाह़ कर दो। अगर ऐसा न करोगे तो ज़मीन में बहुत बड़ा फ़ितना व फ़साद पैदा हो जाएगा।''

(سنن الترمذی، کتاب النکاح، باب اذا جاءکم من ترضون دینہ فزوجوہ، الحدیث:1086، ج2، ص344)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡحَنَّان अपनी शोहरए आफ़ाक़ किताब **मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़** में इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं कि ''जब तुम्हारी लड़की के लिये दीनदार आ़दात व अत्वार का दुरुस्त लड़का मिल जाए तो मह़ज़ माल की हवस में और लखपती के इन्तिज़ार में जवान लड़की के निकाह़ में देर न करो, लड़के के ख़ुल्क़ से मुराद तन्दुरुस्ती, आ़दत की ख़ूबी, न-फ़क़ा पर क़ुदरत सब ही दाख़िल हैं। इस लिये कि अगर मालदार के इन्तिज़ार में लड़कियों के निकाह़ न किये गए तो इधर तो लड़कियां बहुत कंवारी बैठी रहेंगी और उधर लड़के बहुत

से बे शादी रहेंगे जिस से ज़िना फैलेगा और ज़िना की वजह से लड़की वालों को आ़र व नंग होगी, नतीजा येह होगा कि ख़ानदान आपस में लड़ेंगे, क़त्लो ग़ारत होंगे, जिस का आजकल ज़ुहूर होने लगा है।"

(مراۃ المناجیح، کتاب النکاح، الفصل الثانی، ج5، ص8)

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! ख़्वाह म ख़्वाह अमीर घरानों से रिश्तेदारी के चक्कर में अपनी बच्चियों को घर नहीं बिठाए रखना चाहिये बल्कि मुनासिब और नेक लड़का मिलते ही शहन्शाहे मदीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म पर अ़मल करते हुए फ़ौरन अपनी बच्ची की शादी कर देना चाहिये। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शाह किरमानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی ने अपनी शहज़ादी के लिये पड़ोसी मुल्क के बादशाह का रिश्ता ठुकरा दिया और मस्जिद मस्जिद घूम कर एक नेक नौ जवान तलाश कर के उस से अपनी लड़की की शादी कर दी।

सय्यि-दतुना उम्मे दरदा की दुन्या से बे रग़बती :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजा सय्यि-दतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बारे में मरवी है कि वोह एक साहि़बे हुस्नो जमाल ख़ातून थीं, आप ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की नेकी की दा'वत से इस क़दर मु-तअस्सिर थीं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की निगाहों में भी दुन्या की कुछ है़सिय्यत न थी। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वफ़ात के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को निकाह़ का पैग़ाम भिजवाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जवाब दिया : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मैं (सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बा'द) दुन्या में किसी से शादी नहीं करूंगी, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने चाहा तो जन्नत में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजिय्यत में ही रहूंगी।"

(صفۃ الصفوۃ، الرقم76ابو الدَّرْدَاء عویمر بن زید، ذکر وفاۃ ابی الدَّرْدَاء، ج1، ص325)

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के घराने के क्या कहने ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की बेटी और ज़ौजा दोनों ने दुन्या पर आख़िरत को तरजीह़ दी । **ऐ काश !** हमारे घरों में भी सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के घर जैसा म-दनी माह़ोल बन जाए ।

दुआ़ है येह तुझ से, दिल ऐसा लगा दे
न छूटे कभी भी ख़ुदा म-दनी माह़ोल
हमें आ़लिमों और बुज़ुर्गों के आदाब
सिखाता है हर दम सदा म-दनी माह़ोल
हैं इस्लामी भाई सभी भाई भाई
है बेह़द मह़ब्बत भरा म-दनी माह़ोल
यक़ीनन मुक़द्दर का वोह है सिकन्दर
जिसे ख़ैर से मिल गया म-दनी माह़ोल
यहां सुन्नतें सीखने को मिलेंगी
दिलाएगा ख़ौफ़े ख़ुदा म-दनी माह़ोल

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

म-दनी माह़ोल की बहार :

मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के अ़लाक़े निशात़ कॉलोनी की इस्लामी बहन उम्मे ख़लील अ़त्तारिय्या अपने बड़े भाई की इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में अ़लाक़ाई सत़ह़ पर होने वाले इस्लामी बहनों के इज्तिमाअ़ में शरीक हुईं तो इतनी मु-तअस्सिर हुईं कि दा'वते इस्लामी की हो कर रह गईं । क़ादिरिय्या अ़त्तारिय्या सिल्सिले में बैअ़त हो कर ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की मुरीदनी बनीं । इज्तिमाअ़ और अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत इन का

मा'मूल बन गया। इन्हों ने न सिर्फ़ ख़ुद म-दनी बुरक़अ़ ओढ़ा बल्कि इन की तरग़ीब पर अ़लाक़े कई की इस्लामी बहनों ने म-दनी बुरक़अ़ पहनना शुरूअ़ कर दिया। दा'वते इस्लामी का म-दनी काम करते करते येह ह़ल्क़ा मुशा-वरत की ज़िम्मादार बन गईं। अ़लाक़ाई सत्ह़ पर होने वाला इस्लामी बहनों का इज्तिमाअ़ भी इन के घर मुन्तक़िल हो गया। इन्हों ने अपनी बड़ी बहन के साथ मिल कर नेकी की दा'वत की ख़ूब धूमें मचाईं। मिलन-सारी, हुस्ने अख़्लाक़ की चाश्नी से लबरेज़ इन्फ़िरादी कोशिश और म-दनी मिठास से तर बतर बयानात की बदौलत बहुत सी इस्लामी बहनों को दा'वते इस्लामी के मुश्कबार म-दनी माह़ोल से वाबस्ता किया। हुसूले इ़ल्मे दीन के लिये एक सुन्नी दारुल उ़लूम में आ़लिमा कोर्स में दाख़िला लिया मगर वालिदा की बीमारी की वजह से दो साल बा'द ता'लीम अधूरी छोड़नी पड़ी।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन का निकाह़ दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के रुक्न के साथ हुवा, (येह निकाह़ इन के मीठे मीठे मुर्शिदे करीम अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ ने पढ़ाया था) शादी के बा'द बाबुल मदीना कराची में 12 दिन के तरबिय्यती कोर्स में भी शिर्कत की, इस दौरान त़बीअ़त भी ख़राब हुई मगर हिम्मत न हारी और कोर्स में मुकम्मल शिर्कत की। इस्लामी बहनों के म-दनी क़ाफ़िले में भी सफ़र इख़्तियार किया।

ख़ुद इन्ही का तह़रीरी बयान है कि म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र से पहले मुझे सांस की तक्लीफ़ थी लेकिन म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की ब-र-कत से मुझे इस तक्लीफ़ में काफ़ी कमी महसूस हुई। **इन्हों ने अपना ज़ेवर जिस की मालियत तक़रीबन 38 हज़ार रुपै बनती थी, दा'वते इस्लामी को दे दिया था।** अपने घर में इस्लामी बहनों के म-दनी क़ाफ़िलों की मेज़बानी भी की और शु-रकाए क़ाफ़िला इस्लामी बहनों की ख़ूब ख़िदमत

की। अपनी शादी के तक़रीबन दो साल बा'द 26 र-मज़ानुल मुबारक 1430 हि. जुमा'रात को अ़स्र के वक़्त इन की त़बीअ़त ज़ियादा ख़राब हो गई, **इन्हों ने बुलन्द आवाज़ से "या ग़ौस अल मदद" कहना शुरूअ़ कर दिया और कलिमए त़य्यिबा "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ" पढ़ा।** इन्हें फ़ौरन अस्पताल ले जाया गया मगर येह जां बर न हो सकीं और इन्तिक़ाल फ़रमा गईं, **इन का आख़िरी कलाम لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ था। चुनान्चे,**

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है कि जिस का आख़िरी कलाम "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ" हो वोह जन्नती है।

(سنن ابی داؤد، کتاب الجنائز، باب فی التلقین، الحدیث:3116، ج3، ص255)

अपनी वफ़ात के वक़्त भी येह म-दनी बुरक़अ़ में मल्बूस थीं। इन के छोटे भाई का बयान है कि अस्पताल में उन्हें जब कपड़े में लपेटा गया तो उन के हाथ पहलू के साथ थे मगर जब ग़ुस्ल देने के लिये इस्लामी बहनों ने कपड़ा खोला तो उन के हाथ इस त़रह़ अदब के साथ बंधे हुए थे जिस त़रह़ सलातो सलाम पढ़ते वक़्त बांधे जाते हैं। इन की ख़ालाज़ाद बहन और मुमानी का बयान है कि ग़ुस्ल के बा'द हम ने देखा की मर्ह़ूमा उम्मे ख़लील अ़त्त़ारिय्या के लबों पर मुस्कराहट खेल रही थी, और उन का चेहरा ऐसा नूरानी हो रहा था कि सभी इस्लामी बहनें रश्क कर रही थीं।

मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) में इन के घर पर जब इस्लामी बहनें इन की मय्यित के गिर्द जम्अ़ हो कर ना'त ख़्वानी कर रही थीं तो **कसीर इस्लामी बहनों ने जागती आंखों से देखा कि उम्मे ख़लील अ़त्त़ारिय्या के लब भी यूं हिल रहे हैं कि गोया इस्लामी बहनों के साथ मिल कर ना'त पढ़ रही हों।** इन्हें 27 र-मज़ानुल मुबारक 1430 हि. को निशात़ कॉलोनी के

क़ब्रिस्तान में इन के वालिदे मर्हूम के क़रीब दफ़्न कर दिया गया। इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों ने इतना कसीर ईसाले सवाब किया जिस का शुमार नहीं। उम्मे ख़लील अ़त्तारिय्या की तदफ़ीन के चन्द रोज़ बा'द इन की भान्जी ने ख़्वाब में देखा कि मर्हूमा सफ़ेद लिबास में मल्बूस फूलों के दरमियान बहुत ख़ुश व ख़ुर्रम बैठी हैं। भान्जी के दरयाफ़्त करने पर बताया कि येह मेरा घर है और मैं यहां बहुत सुकून से हूं।

गुनहगारों को हातिफ़ से नवीदे ख़ुश मआली है
मुबारक हो शफ़ाअ़त के लिये अहमद सा वाली है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का शौक़े इ़बादत

जब आफ़्ताबे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जल्वा नुमाइयों से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के दिल की तारीकियां जगमग होने लगीं। तो दिल की दुन्या में एक म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अपनी झोली में इ़बादत, रियाज़त, राहे ख़ुदा में सफ़र, तिलावते क़ुरआने मजीद और सज्दों की कसरत के साथ साथ इ़ल्म व तक़्वा का बे शुमार ख़ज़ाना जम्अ़ करने का पुख़्ता अ़ज़्म फ़रमा लिया। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इस के ह़ुसूल के लिये शबो रोज़ एक कर दिया। चुनान्चे,

शौक़े इ़बादत में तर्के तिजारत :

सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ एक मसरूफ़ ताजिर (Business man) थे। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के दिल में इ़बादत व रियाज़त का शौक़ पैदा हुवा तो इन दोनों चीज़ों को एक साथ ले कर चलना आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के लिये कुछ मुश्किल हो गया। चुनान्चे, बिग़ैर किसी तरद्दुद के तिजारत को ख़ैरआबाद कह कर अपना सारा कारोबार (Business) तर्क कर दिया। और

इस का सबब येह म-दनी सोच बनी कि मुझे इल्मे दीन सीखना है। पस इस जज़्बे ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को कारोबार तर्क करने पर आमादा किया और बिग़ैर किसी तरद्दुद के आप ने कारोबार छोड़ दिया और इबादत व रियाज़त और इल्मे दीन सीखने में मसरूफ़े अमल हो गए। चुनान्चे,

एक बार हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इर्शाद फ़रमाया कि "जब शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बि'सत हुई उस वक़्त मैं तिजारत किया करता था। मैं ने कोशिश की, कि मेरी तिजारत भी बाक़ी रहे और मैं इबादत भी करता रहूं लेकिन ऐसा न हो सका और बिल आख़िर मैं तिजारत को छोड़ कर इबादत में मश्ग़ूल हो गया। उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में अबू दरदा की जान है ! अगर मस्जिद के दरवाज़े पर मेरी दुकान हो और उस से रोज़ाना चालीस[40] दीनार कमा कर राहे ख़ुदा में स-दक़ा करूं और मेरी नमाज़ों में भी ख़लल वाक़ेअ न हो तो फिर भी मैं तिजारत करना पसन्द नहीं करूंगा।" किसी ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ! आप तिजारत को इस क़दर ना पसन्द क्यूं जानते हैं ?" फ़रमाया : "हिसाब की शिद्दत के ख़ौफ़ की वजह से।"

(تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر، الرقم 5464 عویمر بن زید، ج47، ص108)

येह सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के आ'ला द-रजे के तक़्वा की अ़लामत थी और येह उन की ही म-दनी सोच थी कि उन्हों ने इस त़रह़ तिजारत के मुआ़-मलात को ख़ैरआबाद कहा और उसे छोड़ कर इबादत में मसरूफ़ हो गए।

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! एक त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के येह मुक़द्दस सह़ाबी हैं कि इबादत और इल्मे दीन ह़ासिल करने के शौक़ ने तिजारत

ही छुड़वा दी और एक हम हैं कि ग़मे माल व रोज़गार हम से फ़र्ज़ नमाज़ें भी छुड़वा देता है। माल व दुन्या की हवस इस क़दर ग़ालिब होती है कि 30 दिन में 3 दिन भी म–दनी क़ाफ़िलों में सफ़र नहीं कर पाते। दा'वते इस्लामी का हफ़्तावार इज्तिमाअ़ जो कि इ़ल्मे दीन सीखने का बेहतरीन ज़रीआ़ है इस में भी हाज़िरी का वक़्त नहीं निकलता। ऐ काश ! सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सदक़े हमें माल व दुन्या से बे रग़बती नसीब हो जाए।

सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की दुन्या और माले दुन्या से बे रग़बती

पैकरे अ़–ज़–मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है कि आख़िरत के मुक़ाबले में दुन्या की मिसाल ऐसे है जैसे तुम में से कोई दरिया में अपनी उंगली डुबो कर देखे कि इस के साथ कितना पानी आया है।

(صحیح مسلم، کتاب الجنّۃ وصفۃ نعیمھا واھلھا، باب فناء الدّنیا .... الخ، الحدیث: 2858، ص 1529 ملخصاً)

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि बन्दा मेरा माल मेरा माल कहता रहता है ह़ालां कि इस के माल के सिर्फ़ तीन ह़िस्से हैं : एक वोह जो खा कर ख़त्म कर दिया दूसरा वोह जो पहन कर बोसीदा कर दिया और तीसरा वोह जो किसी को (राहे ख़ुदा में) दिया और जम्अ़ कर लिया। और इस के इ़लावा जो कुछ है सब ख़त्म हो जाने वाला है और वोह उसे दूसरे लोगों के लिये छोड़ने वाला है।

(صحیح مسلم، کتاب الزھد والرقاق، الحدیث: 2959، ص 1582)

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن

को हमेशा दुन्या से बे रग़बती का दर्स दिया। और येह उसी तरबिय्यत का असर था कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की त़बीअ़त मुबारक में दुन्या से बे रग़बती पाई जाती थी, ज़ैबो ज़ीनत से इन्हों ने मुकम्मल त़ौर पर कनारा कशी इख़्तियार फ़रमा रखी थी। आसाइश का इन की ज़िन्दगी में दूर दूर तक नामो निशान न था। खाने पीने में सिर्फ़ इसी क़दर पर इक्तिफ़ा फ़रमाते कि कमर सीधी रह जाए, आप सादा लिबास ज़ैबे तन फ़रमाया करते और वोह भी खुरदरा। जब ज़ैबो आराइश से बे रग़बती, खाने पीने और पहनने में इस क़दर सा-दगी नसीब हो तो आदमी कम आमदनी पर भी गुज़ारा कर लेता है। लेकिन हमारा त़र्ज़े मुआ़-शरत सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से बहुत मुख़्तलिफ़ है क्यूं कि हमें येह सारी चीज़ें मुयस्सर नहीं, हमारे खाने पीने, पहनने ओढ़ने और रहने सहने के मुआ़-मलात में सा-दगी का कोई तसव्वुर नहीं। हमें तो हर वक़्त कसीर माल की ज़रूरत रहती है।

ऐ काश ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से हमें येह सा-दगी नसीब हो जाए और हम अपने आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के पैकर बन जाएं। और हमारी ज़बान पर हमेशा येह अश्आ़र जारी रहें कि जिन की त़रफ़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ ने कई मरतबा हमारी तवज्जोह दिलाई है।

कभी जव की मोटी रोटी तो कभी खजूर पानी
तेरा ऐसा सादा खाना म-दनी मदीने वाले
है चटाई का बिछोना कभी ख़ाक ही पे सोना
कभी हाथ का सिरहाना म-दनी मदीने वाले
तेरी सा-दगी पे लाखों तेरी आ़जीज़ी पे लाखों
हों सलामे आ़जिज़ाना म-दनी मदीने वाले

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह अश्आ़र हम अपनी ज़बान से अदा तो करते हैं मगर सा-दगी वाले येह अन्दाज़ हम में पैदा हो रहे हैं न इस सुन्नत पर अ़मल करने में हम काम्याब हो रहे हैं। हम सब को इस पर

ग़ौर करना चाहिये।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सब को सा-दगी और तक़्वा व परहेज़ गारी वाली ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाए। और हमारी ज़िन्दगी में ऐसा म-दनी इन्क़िलाब पैदा फ़रमा दे कि दुन्या और माले दुन्या की महब्बत हमारे दिल से दूर हो जाए, तन आसानी वाला अन्दाज़ ख़त्म हो जाए।

मेरा दिल पाक हो सरकार ! दुन्या की महब्बत से
मुझे हो जाए नफ़रत काश ! आक़ा मालो दौलत से
न दौलत दे न सरवत दे मुझे बस येह सआ़दत दे
तेरे क़दमों में मर जाऊं मैं रो रो कर मदीने में

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! क़नाअ़त एक अ़ज़ीम दौलत है, जिसे येह नसीब हो जाए उसे दूसरी किसी दौलत की ह़ाजत नहीं रहती। चुनान्चे,

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 491 ता 493 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ फ़रमाते हैं : "अपने दौर के जय्यिद आ़लिम ह़ज़रते सय्यिदुना ख़लील बसरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی की ख़िदमत में "**अहवाज़**" से अमीर (या'नी ह़ाकिम) सुलैमान बिन अ़ली का नुमाइन्दा ख़ुसूसी ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "शहज़ादों की ता'लीम व तरबिय्यत के लिये ह़ाकिम ने आप को शाही दरबार में त़लब फ़रमाया है।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना ख़लील बसरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی ने सूखी रोटी का टुकड़ा दिखाते हुए जवाब

इर्शाद फ़रमाया : ''मेरे पास जब तक येह सूखी रोटी का टुकड़ा मौजूद है मुझे दरबारे शाही की चा–करी की कोई ह़ाजत नहीं ।''

(रूह़ानी ह़िकायात, ह़िस्सए अव्वल, स. 106, रूमी पब्लीकेशन्ज़ मर्कज़ुल औलिया लाहोर)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

जुस्त–जू में क्यूं फिरें माल की मारे मारे
हम तो सरकार के टुकड़ों पे पला करते हैं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे अरबाबे इक़्तिदार से किस क़दर दूर रहते हैं जब कि आज हम जैसों को बिलफ़र्ज़ सद्र या वज़ीरे आ'ज़म का दा'वत नामा मिल जाए तो हज़ार मसरूफ़िय्यात और हज़ार ज़रूरी मुआ–मलात छोड़ दें और ख़्वाह हज़ार किलो मीटर का सफ़र तै़ करना पड़े वोह भी कर के, ख़ूब उ़म्दा लिबास पहने कशां कशां एसेम्बली हॉल के रू बरू पहुंच कर सब से पहले लाइन में खड़े हो जाएं ! हाए नफ़्स परवरी !!!! बिला सख़्त मजबूरी के महूज़ दुन्यवी मफ़ादात और हुब्बे जाह की ख़ातिर अरबाबे इक़्तिदार व अफ़्सरान वग़ैरा के पीछे फिरना, इन की दा'वतों में शरीक होना, इन से तमग़ा–जात ह़ासिल करना, مَعَاذَاللّٰہ इन के साथ तसावीर बनवाना फिर इन तस्वीरों को संभाल कर रखना, लोगों को दिखाते फिरना, इन की फ़्रेम बनवाना और इस को घर या दफ़्तर में लटकाना वग़ैरा वग़ैरा ह़–र–कतें अपने अन्दर हलाकतें तो रखती हैं मगर इन में ब–र–कतें नज़र नहीं आतीं । हां अहम दीनी मफ़ाद के लिये या इन के शर से बचने के लिये अगर इन के पास जाना पड़ जाए तो और बात है कि जो मजबूर है वोह मा'ज़ूर है । मन्क़ूल है : بِئْسَ الْفَقِیْرُ عَلٰی بَابِ الْاَمِیْرِ (या'नी फ़ु–क़रा में वोह शख़्स बहुत बुरा है जो अमीरों के दरवाज़े पर जाए) और نِعْمَ الْاَمِیْرُ عَلٰی بَابِ الْفَقِیْرِ (या'नी उ–मरा में से वोह

शख़्स बड़ा अच्छा है जो फ़क़ीरों के दर पर हाज़िर हो)

(शैतान की हिकायात, स. 71 ता 72, फ़रीद बुक स्टॉल मर्कज़ुल औलिया लाहोर)

बहर हाल शैतान की चाल बहुत ख़तरनाक होती है। बसा अवक़ात वोह नफ़्सानी ख़्वाहिशात को दीनी मफ़ादात बावर करवा कर भी अरबाबे इक़्तिदार के क़दमों में डाल देता है। इसी सबब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक और मोहतात बन्दे इन से दूर रहने में ही आफ़िय्यत समझते हैं। दूसरों के माल पर नज़र रखने के बजाए जो क़नाअ़त इख़्तियार करे वोह दोनों जहां में काम्याब है।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 491 ता 493)

जिन का माल उन्ही पर वबाल :

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाया करते कि मालदार भी खाते हैं और हम (नादार) भी, वोह भी पीते हैं और हम भी, वोह भी लिबास पहनते हैं और हम भी, वोह भी सुवार होते हैं और हम भी। उन के पास बहुत सा ज़ाइद माल होता है जिस की जानिब वोह भी देखते रहते हैं और हम भी उन के साथ उन के मालों को देखते हैं, मगर उन के माल का हिसाब सिर्फ़ उन्ही से होगा और हम उस से बरी होंगे।

(الزھد لابن مبارك، باب فی طلب الحلال، الحدیث: 592، ج1، ص210)

भलाई किस में है ?

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! आजकल मालो दौलत को ख़ैर व भलाई और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल समझा जाता है। जो सहीह नहीं। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इस बात की वज़ाहत करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "भलाई इस में नहीं कि तुम्हें कसीर माल व औलाद मिल जाए बल्कि भलाई तो इस में है कि तुम्हारा हिल्म बढ़े, इल्म तरक़्क़ी करे

और तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में दूसरे लोगों से आगे बढ़ जाओ और जब कोई नेकी करने की सआ़दत पाओ तो उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द बजा लाओ और गुनाह हो जाने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बख़्शिश का सुवाल करो।''

(المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، باب کلام ابی الدّرداء، الحدیث6، ج8، ص167)

सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की माल से नफ़रत

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इ़बादत से मह़ब्बत और माले दुन्या से दूर रहने के मु-तअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत इस त़रह़ करो गोया तुम उसे देख रहे हो और अपने आप को मुर्दों में शुमार करो और जान लो ! वोह क़लील माल जो तुम्हारी दुन्यवी फ़िक्रों से नजात का ज़रीआ़ बने उस कसीर माल से बेहतर है जो तुम्हारी ग़फ़्लत का सबब बने। जान लो ! नेकी कभी पुरानी नहीं होती और गुनाह कभी भुलाया नहीं जाता।'' (المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد باب کلام ابی الدّرداء، الحدیث1، ج8، ص167)

इस्लाह़े उम्मत का जज़्बा :

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ हर लम्ह़ा नेकियां कमाने की कोशिश में लगे रहते। आप की रातें अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करते हुए गुज़रतीं तो दिन रोज़े की ह़ालत में बसर होते। और आप हर वक़्त इस फ़िक्र में मुब्तला रहते कि **काश !** बाक़ी सब मुसल्मान भी दुन्या से मुंह मोड़ कर सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो जाएं। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ज़ौजा सय्यिदह उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ मेरे पास तशरीफ़ लाए तो बड़े ग़ुस्से में थे। मैं ने ग़ुस्से का सबब

पूछा तो फ़रमाने लगे : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत के कामों में सिर्फ़ येह पाता हूं कि वोह नमाज़ जमाअ़त से पढ़ लेते हैं।''

(صحیح البخاری، کتاب الاذان، باب فضل صلاۃ الفجر فی جماعۃ، الحدیث: 650، ج1، ص233)

سُبۡحٰنَ اللّٰہ ! सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का लोगों की बे अ़-मली पर कुढ़ने का जज़्बा मुला-ह़ज़ा कीजिये। चूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ख़ुद आ़बिदो ज़ाहिद, रोज़ादार व शब बेदार थे लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ चाहते थे कि तमाम मुसल्मान भी इसी अन्दाज़े ह़यात को इख़्तियार कर के इन की त़रह़ आ़बिदो ज़ाहिद बन जाएं।

दा'वते इस्लामी और इस्लाह़े उम्मत का म-दनी जज़्बा :

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें नेक बनने और नेकी की दा'वत आ़म करने का जज़्बा अ़त़ा फ़रमाए। तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक ''**दा'वते इस्लामी**'' के सुन्नतों भरे, महके महके म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी इस जज़्बे का अ़-मली पैकर बनाती है। चुनान्चे,

मन्डी बहाउद्दीन (पंजाब, पाकिस्तान) के रिहाइशी एक इस्लामी भाई के मक्तूब का ख़ुलासा है कि मेरे शबो रोज़ गुनाहों में बसर हो रहे थे मगर **दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता एक इस्लामी भाई की नेकी की दा'वत और मुसल्मानों से ख़ैर ख़्वाही की कुढ़न मेरी बिगड़ी बना गई,** वोह इस त़रह़ कि वोह इस्लामी भाई मुझ पर इन्फ़िरादी कोशिश कर के अपने साथ हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ले जाते। इस त़रह़ اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) में मीनारे पाकिस्तान के पास होने वाले सूबाई सत़ह़ के इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी की सआ़दत भी नसीब हुई।

वोह इस्लामी भाई किसी दूसरे अ़लाक़े में शिफ़्ट हो गए तो मुझ पर सुस्ती ग़ालिब आ गई और मैं ने इज्तिमाअ़ में जाना छोड़ दिया। मगर उस इस्लामी भाई के म-दनी ज़ेह्न पर सद आफ़रीन ! कि उन्हों ने **''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है''** के म-दनी मक़्सद के तह़्त मेरी ख़बर गीरी न छोड़ी, बल्कि मुसल्सल मेरे बारे में दूसरे इस्लामी भाइयों से पूछा करते और **जब उन्हें मा'लूम हुवा कि मैं ने इज्तिमाअ़ में जाना छोड़ दिया है और वापस अपनी पुरानी रविश की जानिब लौट रहा हूं** तो उन्हों ने अ़लाक़े के दो इस्लामी भाइयों की ज़िम्मादारी लगाई कि वोह मुझे अपने साथ इज्तिमाअ़ में ले कर आया करें। चुनान्चे, वोह दोनों इस्लामी भाई मुझे अपने साथ ले जाने के लिये अपने क़ीमती वक़्त में से कुछ वक़्त निकाल कर न सिर्फ़ इज्तिमाअ़ बल्कि मग़रिब और इ़शा की नमाज़ों के लिये भी मेरे घर तशरीफ़ लाते **मगर मुझ गुनहगार पर नफ़्सो शैत़ान का ऐसा ग़-लबा त़ारी हो चुका था कि अपने छोटे भाई से कहला भेजता कि घर पर नहीं हूं।**

इसी त़रह़ मुसल्सल चार हफ़्ते गुज़र गए, वोह दोनों इस्लामी भाई तशरीफ़ लाते और मैं हर बार कहला भेजता कि घर पर नहीं हूं। **मगर न जाने दा'वते इस्लामी का महका महका और सुन्नतों भरा म-दनी माह़ोल किन जज़्बों से आशना कर देता है** कि इस माह़ोल से वाबस्ता होने की ब-र-कत से हर इस्लामी भाई के दिल में नेकियों से मह़ब्बत और बुराइयों से नफ़रत का ऐसा जज़्बा पैदा हो जाता है कि उस का दिल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की त़रह़ हर वक़्त दूसरों की इस्लाह़ की कोशिश के म-दनी मक़्सद पर अ़मल के सिल्सिले में कुढ़ता रहता है। चुनान्चे, येही वजह है कि मेरी इस क़दर बे रुख़ी के बा वुजूद उन दोनों इस्लामी भाइयों का ह़ौसला पस्त हुवा न टूटा। और आख़िर एक दिन मेरे मुक़द्दर का सितारा चमका और मेरी

वालिदए माजिदा ने मुझ से पूछ लिया : ''येह सब्ज़ सब्ज़ इ़मामे वाले तुम्हारे पास क्यूं आते हैं ?'' तो मैं ने सच बताते हुए अ़र्ज़ की : ''मुझे नमाज़ के लिये बुलाने आते हैं।'' तो वालिदए मोह़तरमा फ़रमाने लगीं : ''येह तो बहुत अच्छी बात है, तुम ज़रूर जाया करो।'' मगर मैं ने सारा दिन काम की वजह से थकावट का उ़ज़्र पेश किया तो वालिदए माजिदा ने फ़रमाया कि नमाज़ पढ़ा करो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ थकावट ख़ुद ही दूर हो जाएगी।

बस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करम हो गया और मैं ने मस्जिद का रुख़ कर लिया और फिर आहिस्ता आहिस्ता म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होता चला गया, सर पर इ़मामे का ताज सज गया, साथ ही ज़ुल्फ़ें और दाढ़ी भी सजा ली और अमीरे अहले सुन्नत का मुरीद बन गया। एक वक़्त येह था कि मैं नमाज़ों में सुस्ती किया करता था मगर अब इस्लामी भाइयों की सच्ची लगन, ख़ैर ख़्वाहिये उम्मत के जज़्बे की ब-र-कत से नेकी की दा'वत देने वाला बन चुका हूं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरे दो म-दनी मुन्ने हैं और मैं ने दोनों को दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों के लिये वक़्फ़ करने की निय्यत की हुई है।

मुख़्तसर सी ज़िन्दगी है भाइयो !
नेकियां कीजे न ग़फ़्लत कीजिये
गर रिज़ाए मुस्त़फ़ा दरकार है
सुन्नतों की ख़ूब ख़िदमत कीजिये
सुन्नतें अपना के ह़ासिल भाइयो !
रह़मते मौला से जन्नत कीजिये

(वसाइले बख़्शिश, स. 120)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदुना अबू दरदा और नेकी की दा'वत का जज़्बा :

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ हर दम नेकी की दा'वत आ़म करने के जज़्बे से सरशार रहते। इसी लिये एक बार अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से शाम जाने की इजाज़त त़लब की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इन्कार कर दिया, फिर इस शर्त़ पर जाने की इजाज़त दी कि वहां के गवर्नर बन जाएं मगर सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने गवर्नर बनना क़बूल न फ़रमाया और अ़र्ज़ की : "मैं शाम इस लिये जाना चाहता हूं ताकि वहां के लोगों को **अल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ की सुन्नतें सिखाऊं और उन्हें सुन्नत के मुत़ाबिक़ नमाज़ पढ़ाऊं।"

सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के नेकी की दा'वत आ़म करने का जज़्बा देख कर अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इन्कार न फ़रमा सके और आख़िर कार उन्हें जाने की इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दी। शाम में आ़म त़ौर पर लोगों की आ़दत येह थी कि गर्मियों के मौसिम में जिहाद में मसरूफ़ रहते और जब सर्दियों का मौसिम आता तो वापस अपनी छाउनियों में लौट आते। ऐसी ही एक छाउनी में सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ लोगों को नेकी की दा'वत दिया करते थे। चुनान्चे,

सर्दियों के अय्याम में जब तमाम लोग छाउनियों में जम्अ़ थे तो एक दिन अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ शाम जा पहुंचे और छाउनी के क़रीब जा कर रात का इन्तिज़ार करने लगे। जब रात का अंधेरा ख़ूब फैल गया तो अपने ख़ादिम से फ़रमाया : "ऐ यरफ़ा ! चलो मुझे यज़ीद बिन अबी सुफ़्यान के पास ले चलो ताकि मैं अपनी आंखों से देख सकूं कि क्या उन के पास क़िस्से कहानियां सुनाने वाले मौजूद हैं ? और क्या वक़्फ़ के

माल में से इस वक़्त भी उन के हां चराग़ रोशन है ? और कहीं उन के बिस्तर रेशम के तो नहीं ? और जब वहां पहुंचो तो पहले सलाम करना जब वोह जवाब दें तो अन्दर दाख़िल होने की इजाज़त त़लब करना । अगर वोह तुझे अन्दर दाख़िल होने की इजाज़त न दें तो अपना तआ़रुफ़ करवाना फिर मेरे मु-तअ़ल्लिक़ भी बता देना ।''

पस दोनों चल दिये और जैसा अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इर्शाद फ़रमाया था वैसे ही हुवा । जब अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने सय्यिदुना यज़ीद बिन अबी सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के पास क़िस्सा गो अफ़राद के इ़लावा मुसल्मानों के माल से रोशन चराग़ और रेशम के बिस्तर व गाउ तकिये वग़ैरा मुला-हज़ा फ़रमाए तो ख़ादिम को फ़रमाया : ''ऐ यरफ़ा ! दरवाज़े पर खड़े हो जाओ ।'' और फिर ख़ुद अपने दुर्रे को कानों पर लटका कर सारा सामान घर के दरमियान बांध दिया और वहां मौजूद लोगों से फ़रमाया कि मेरी वापसी तक कोई भी यहां से नहीं जाएगा ।

इस के बा'द अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ अपने ख़ादिम के साथ पहले ह़ज़रते अम्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के पास और फिर ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के पास गए और उन के हां भी येही सब कुछ देख कर वोही कुछ किया जो सय्यिदुना यज़ीद बिन अबी सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के साथ किया था । और फिर अपने ख़ादिम से फ़रमाने लगे : ''ऐ यरफ़ा ! चलो अब मुझे मेरे भाई अबू दरदा के पास ले चलो ताकि मैं उन्हें भी अपनी आंखों से देख लूं (कहीं वोह भी तो ऐसे ही नहीं हो गए) ह़ालां कि मुझे यक़ीन है कि उन के पास क़िस्सा गो अफ़राद होंगे न चराग़ और न ही उन का दरवाज़ा बन्द होगा बल्कि उन का बिस्तर कंकरियों का और तकिया आ़म सी गुदड़ी का होगा और वोह बारीक चादर ओढ़े हुए सख़्त सर्दी में कप-कपा रहे होंगे ।''

वाक़ेई जब अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मुलाक़ात के लिये उन के घर पहुंचे तो उन्हें बिल्कुल वैसे ही पाया जैसा उन के बारे में सोचा था। वोह अंधेरे घर में बिग़ैर चराग़ के तशरीफ़ फ़रमा थे, जब सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ टटोल टटोल कर उन तक पहुंचे और उन से फ़रमाया : "ऐ मेरे भाई ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए ! क्या हम ने आप को बेहतर इन्तिज़ामात न दिये थे ?" तो सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! क्या आप को नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मरवी रिवायत याद नहीं ?" पूछा : "कौन सी ?" अ़र्ज़ की : "वोह रिवायत जिस का मज़्मून येह है कि तुम्हारे पास दुन्या का सिर्फ़ इतना माल होना चाहिये जितना मुसाफ़िर के पास ज़ादे राह होता है।" ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : "हां मुझे याद है।" इस पर सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इस जहाने फ़ानी से पर्दा फ़रमाने के बा'द हम ने क्या किया ?" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ येह सुन कर ज़ारो क़ित़ार रोने लगे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के साथ सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ भी रोने लगे। और फिर येह दोनों अ़ज़ीम सह़ाबी सारी रात रोते रहे यहां तक कि रात गुज़र गई और सुब्ह़ हो गई।

(تاریخ مدینۃ دمشق، الرقم5463عویمر بن زید بن قیس، ج47، ص135تا136 مختصراً)

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के अन्दाज़े ह़यात पर क़ुरबान जाइये, इन के दिल में सुन्नतें सिखाने का कैसा जज़्बा कार फ़रमा था कि इस के लिये मदीनए मुनव्वरह की पुर बहार फ़ज़ाओं को छोड़ कर मुल्के शाम का सफ़र इख़्तियार किया और मुल्के शाम में दुन्यावी ऐ़शो इ़शरत से इस लिये

दूर रहे कि इन के पेशे नज़र ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान था । और एक हम हैं कि दुन्यावी ऐ़शो इ़शरत के दिलदादा होते चले जा रहे हैं और दुन्या की लज़्ज़तों में गुम हो कर नेकी की दा'वत देने और ऐसी दा'वत देने वालों से भी दूर हो चुके हैं ।

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हम मुसल्मान हैं और मुसल्मान का हर काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी के लिये होना चाहिये, मगर बद क़िस्मती से हमारी अक्सरिय्यत नेकी के रास्ते से दूर होती जा रही है, शायद इसी वजह से हमें त़रह़ त़रह़ की परेशानियों का सामना है, कोई बीमार है तो कोई क़र्ज़दार, कोई घरेलू ना चाक़ियों का शिकार है तो कोई तंगदस्त व बे रोज़गार, कोई औलाद का त़लब गार है तो कोई ना फ़रमान औलाद की वजह से बेज़ार । अल ग़रज़ हर एक किसी न किसी मुसीबत में गरिफ़्तार है यक़ीनन दुन्या व आख़िरत की हर परेशानी का वाह़िद ह़ल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बताए हुए कामों में लग जाना है । मुसल्मानों के लिये सब से पहला फ़र्ज़ नमाज़ है मगर अफ़्सोस ! कि हमारी मस्जिदें वीरान हैं ।

ज़िन्दगी बेह़द मुख़्तसर है, यक़ीनन समझदार वोही है कि जितना दुन्या में रहना है उतना दुन्या के लिये और जितना अ़र्सा क़ब्र व आख़िरत का है उतनी क़ब्र व आख़िरत की तय्यारी में मश्ग़ूल रहे, कई हंसते बोलते इन्सान अचानक मौत का शिकार हो कर देखते ही देखते अंधेरी क़ब्र में पहुंच जाते हैं इसी त़रह़ हमें भी मरना पड़ेगा अंधेरी क़ब्र में उतरना पड़ेगा अपनी करनी का फल भुगतना पड़ेगा । क़ब्र रोज़ाना पुकार कर कहती है : ऐ आदमी ! क्या तू मुझे भूल गया ? याद रख मैं तन्हाई का घर हूं, मैं अज्नबिय्यत का घर हूं, मैं घबराहट का घर हूं, मैं कीड़े मकोड़ों का घर हूं, मैं तंगी का घर हूं, मगर जिस के लिये **अल्लाह**

عَزَّوَجَلَّ मुझे वसीअ़ कर दे। एक ह़दीस शरीफ़ में है : ''क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या दोज़ख़ के गढ़ों में से एक गढ़ा।'' (المعجم الاوسط، الحدیث ۸۶۱۳، ج۶، ص۳۳۲)

जब क़ब्र से निकलेंगे तो क़ियामत का पचास हज़ार सालह दिन होगा, सूरज सवा मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा, तांबे की दहक्ती हुई ज़मीन पर नंगे पाउं खड़ा किया जाएगा। याद रखिये कि उस वक़्त तक बन्दा क़ियामत के रोज़ क़दम नहीं हटा सकेगा जब तक उस से चार सुवाल न कर लिये जाएं : (1) उ़म्र किस काम में सर्फ़ की ? (2) जवानी कैसे गुज़ारी ? (3) माल किस त़रह़ कमाया और किस त़रह़ ख़र्च किया ? (4) अपने इ़ल्म पर कहां तक अ़मल किया ?

दुन्या हलाक व बरबाद करने वाली है :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को बह़रीन जिज़्या लाने के लिये भेजा, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अहले बह़रीन से सुल्ह़ फ़रमा कर ह़ज़रते अ़लाअ बिन ह़ज़रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को उन पर ह़ाकिम मुक़र्रर फ़रमा रखा था। जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ माल ले कर बह़रीन से वापस लौटे तो अन्सार ने उन के आने की ख़बर सुन ली और सब ने नमाज़े फ़ज्र आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ अदा की। जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ अदा फ़रमा कर वापस जाने लगे तो सब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गए। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें देख कर तबस्सुम फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया : ''मेरे ख़याल में तुम ने सुन लिया है कि अबू उ़बैदा माल ले कर आ गए हैं।'' अ़र्ज़ की : ''जी हां **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم!'' फ़रमाया : ''तो ख़ुश हो जाओ और इस बात की उम्मीद रखो जो तुम्हें ख़ुश कर दे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे तुम्हारे ग़रीब हो जाने का डर नहीं। बल्कि

मुझे तो डर है कि दुन्या तुम पर कुशादा न हो जाए जैसे तुम से पहले लोगों पर हुई थी। फिर तुम एक दूसरे से जलने लगो जैसे पहले लोग जलने लगे थे और येह तुम्हें भी वैसे ही हलाक कर दे जैसे पहले लोगों को इस ने किया था।''

(صحیح البخاری، کتاب الجزیۃ، باب الجزیۃ والموادعۃ۔۔۔ الخ، الحدیث: 3158، ج2، ص363)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡحَنَّان इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं कि ''हुज़ूरे अन्वर का येह फ़रमान ह़ज़राते सह़ाबा को डराने और एह़तियात़ बरतने के लिये है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुज़ूर के सह़ाबा को दुन्यावी ना जाइज़ रग़बत और हलाकत या'नी कुफ़्रो तुग़्यान से मह़फ़ूज़ रखा। वोह ह़ज़रात बादशाह व अमीर हो कर भी दुन्या में फंसे नहीं। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के पास अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में एक ही कुरता था। जिसे धो धो कर पहनते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र के कफ़न के लिये घर में कपड़ा न था। पहने हुए कपड़े धो कर उन्हीं में आप को दफ़्न कर दिया गया, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली ने अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में फ़रमाया कि मैं अपनी तलवार फ़रोख़्त करना चाहता हूं कि आज घर का ख़र्च चला सकूं। वोह ह़ज़रात अमीरी में फ़क़ीरी कर गए।''

(مراٰۃ المناجیح، کتاب الرقاق، الفصل الاول، ج7، ص9)

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखिये अमीरुल मुअमिनीन सिद्दीक़े अक्बर, फ़ारूक़े आ'ज़म और मौला मुश्किल कुशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم की सीरते मुबा-रका, कि दौरे ख़िलाफ़त में भी दुन्या से बे रग़बती का क्या आ़लम था।

मेरा दिल पाक हो सरकार दुन्या की महब्बत से
मुझे हो जाए नफ़रत काश ! आक़ा मालो दौलत से

(वसाइले बख़्शिश, स. 133)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

क़ौमे आ़द के तर्के की क़ीमत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने जब अहले दिमश्क़ को मालो दौलत जम्अ़ करते हुए देखा, और देखा कि वोह अपने रहने के लिये पुख़्ता मकानात बनाने में मश्ग़ूल हो कर आख़िरत को भुलाते जा रहे हैं तो उन्हें नसीह़त करते हुए इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अहले दिमश्क़ ! क्या तुम ह़या नहीं करते ? इतना माल जम्अ़ करते हो जो खा न सकोगे। ऐसे मकान ता'मीर करते हो जिन में रह न पाओगे और ऐसी उम्मीदें बांधते हो जो पूरी न हो सकेंगी। तुम से पहले भी ऐसे लोग गुज़रे हैं जिन्हों ने माल जम्अ़ किया, लम्बी उम्मीदें बांधीं और मज़्बूत़ इ़मारतें ता'मीर कीं लेकिन उन के जम्अ़ शुदा अम्वाल तबाह व बरबाद हो गए, उन की उम्मीदें ख़ाक में मिल गईं और उन के मह़ल्लात उन की क़ब्रों में तब्दील हो गए, येह क़ौमे आ़द थी, जिस ने ''अ़दन'' से ले कर ''अ़मान'' तक माल जम्अ़ किया और कसीर औलाद पाई, पस तो कोई है जो मुझ से क़ौमे आ़द का तर्का दो दिरहम के इ़वज़ ख़रीद ले ?'' (شعب الایمان للبیہقی، باب فی الزھد وقصر الامل، فصل فی ذم بناء مالایحتاج الیہ من الدور، الحدیث: 10740، ج7، ص398، بتغیر)

वीरान इ़मारतों से इ़ब्रत :

ह़ज़रते सय्यिदुना **मक्ह़ूल** رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ वीरान व बरबाद इ़मारतों के पास जा कर कहते : ''ऐ बरबाद होने वाली इ़मारतो ! तुम्हारे पहले रिहाइशी बरबाद हो कर कहां चले गए ?''

(الزھد لوکیع، باب الخراب، الحدیث: 509، الجزء الثانی، ص823)

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الۡمُبِیۡن का त़रीक़ा था। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी दुन्या से बे रग़बती अ़त़ा फ़रमा दे। और **ऐ काश !** हमारे दिल से दुन्या की मह़ब्बत निकल जाए और हम इ़बादत व रियाज़त में लग जाएं। और **ऐ काश ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें किसी का मोह़ताज न करे और हमें इख़्लास की दौलत मिल जाए।

अस्ली घर :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन का'ब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि रात के वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास चन्द लोग बत़ौरे मेहमान आए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन की गर्मा गर्म खाने से तवाज़ोअ़ फ़रमाई मगर रात गुज़ारने के लिये कोई लिह़ाफ़ न भेजा तो उन में से एक बोला : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने खाना तो भेज दिया है मगर लिह़ाफ़ नहीं भेजे, मैं जा कर अ़र्ज़ करता हूं । तो एक दूसरे मेहमान ने ऐसा करने से रोका मगर वोह न रुका । पस जब वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो क्या देखता है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास ऐसे बिस्तर हैं जिन्हें बिस्तर भी नहीं कहा जा सकता था । तो वोह शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से येह कहते हुए वापस चल दिया कि मेरे ख़याल में रात गुज़ारने के लिये आप के पास ऐसे ही बिस्तर हैं जो हमारे पास हैं । तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : हमारा एक अस्ली घर है जिस के लिये हम सामान जम्अ़ कर रहे हैं और उसी की त़रफ़ हमें लौट कर जाना है, लिहाज़ा हम ने अपने बिस्तर और लिह़ाफ़ वग़ैरा वहां भेज दिये हैं, अगर हमारे पास ऐसी कोई शै होती तो ज़रूर आप लोगों की ख़िदमत में ह़ाज़िर कर देते । नीज़ हमारे पीछे एक घाटी है जिस से हलके बोझ वाले लोग भारी भरकम सामान रखने वालों की ब निस्बत आसानी से गुज़र जाएंगे ।

(صفۃ الصفوۃ، الرقم76 ابو الدَّرْدَاء عویمر بن زید، ج1، ص324، مختصرًا)

और एक रिवायत में ह़ज़रते सय्यि–दतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से अ़र्ज़ की : "क्या बात है आप अपने मेहमानों की इस त़रह़ ज़ियाफ़त नहीं करते जिस त़रह़ दूसरे लोग करते हैं ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है कि ''तुम्हारे सामने एक दुश्वार गुज़ार घाटी है जिसे भारी बोझ वाले उ़बूर नहीं कर सकेंगे।'' लिहाज़ा उस घाटी को उ़बूर करने के लिये मुझे हलके बोझ वाला रहना पसन्द है।''

(المستدرک، کتاب الأهوال، باب موت ابن وهب بسمع کتاب الأهوال، الحدیث:8753، ج5، ص792)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दस्तूर है कि जितना माल ज़ियादा उतना ही वबाल भी ज़ियादा। सफ़र का भी उसूल है कि बस या रेलगाड़ी वग़ैरा में जिस के पास ज़ियादा सामान होता है वोह उतना ही परेशान होता है। नीज़ जो लोग बैरूनी मुमालिक का सफ़र करते हैं उन को तजरिबा होगा कि ज़ियादा सामान वाले कस्टम वग़ैरा में किस क़दर परेशान होते हैं ! इसी त़रह़ जिस के पास दुन्या के माल का बोझ कम होगा उसे आख़िरत में आसानी रहेगी। चुनान्चे,

पुल सिरात़ से गुज़रने वालों के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ :

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 480 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**बयानाते अ़त्तारिय्या (ह़िस्सए अव्वल)**'' सफ़ह़ा 441 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ फ़रमाते हैं : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से मरवी है कि मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज, मह़बूबे रब्बे बे नियाज़ صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जहन्नम पर एक पुल है जो बाल से ज़ियादा बारीक और तलवार से तेज़ तर है, उस पर लोहे के कुन्डे और कांटे हैं जो कि उसे पकड़ेंगे जिसे **अल्लाह** तआ़ला चाहेगा। लोग उस पर गुज़रेंगे, बा'ज़ पलक झपक्ने की त़रह़, बा'ज़ बिजली की त़रह़, बा'ज़ हवा की त़रह़, बा'ज़ बेहतरीन और अच्छे घोड़ों और ऊंटों की त़रह़ (गुज़रेंगे)

और फ़िरिश्ते कहते होंगे : "رَبِّ سَلِّمْ،رَبِّ سَلِّمْ" ऐ परवर्द गार ! सलामती से गुज़ार, ऐ परवर्द गार ! सलामती से गुज़ार। बा'ज़ मुसल्मान नजात पाएंगे, बा'ज़ ज़ख़्मी होंगे, बा'ज़ औंधे होंगे, बा'ज़ मुंह के बल जहन्नम में गिर पड़ेंगे।"

(مسند امام احمد، الحدیث: ۲۴۸۴۷، ج۹، ص ۳۱۵)

हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْحَنَّان **मिरआतुल मनाजीह़** में पुल सिरात़ से गुज़रने वालों के बारे में फ़रमाते हैं कि उन की रफ़्तारों में येह फ़र्क़ उन के नेक आ'माल और इख़्लास की वजह से होगा, जैसा अ़मल और जैसा इख़्लास वैसी वहां की रफ़्तार। यहां **अशि'अ़तुल्लम्आ़त** ने फ़रमाया कि आ'माल सबबे रफ़्तार हैं और हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहे करम अस्ली वजह रफ़्तार की है जितना कि हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से कुर्ब ज़ियादा उतनी रफ़्तार तेज़।

(मिरआतुल मनाजीह़, ह़ौज़ व शफ़ाअ़त का बयान, जि. 7, स. 474)

सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ख़ौफ़े आख़िरत

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ किसी जनाज़े में शिर्कत के लिये गए तो मय्यित के घर वालों को रोते देख कर इर्शाद फ़रमाया : "येह कैसे भोले लोग हैं, कल ख़ुद मरने वाले हैं और आज इस मरने वाले पर रो रहे हैं।" (الزھد لابی داؤد، باب من خبر ابی الدرداء، الحدیث: 248، ص215)

लम्ह़ा भर ग़ौरो फ़िक्र करने की फ़ज़ीलत :

ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते कि (आख़िरत के मुआ़-मलात में) लम्ह़ा भर ग़ौरो फ़िक्र करना सारी रात की (नफ़्ली) इ़बादत से बेहतर है।

(الزھد لابی داؤد، باب من خبر ابی الدرداء، الحدیث: 209، ص192)

रोज़े आख़िरत सब से ज़ियादा ख़ौफ़ वाली बात :

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू

दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ आख़िरत के हिसाब से इस क़दर डरते थे कि फ़रमाया करते : ''मुझे सब से ज़ियादा इस बात से ख़ौफ़ आता है कि क़ियामत के दिन मेरा नाम ले कर पूछा जाए : ''ऐ **उ़वैमिर !** क्या तूने इ़ल्म ह़ासिल किया या जाहिल रहे ?'' अगर मैं ने अ़र्ज़ की, कि इ़ल्म ह़ासिल किया है। तो फिर मुझ से हुक्म और मुमा-न-अ़त वाली हर आयते क़ुरआनी के मु-तअ़ल्लिक़ पूछगछ की जाएगी कि क्या तूने इन आयात पर अ़मल भी किया ? मैं नफ़्अ़ न देने वाले इ़ल्म, सैर न होने वाले नफ़्स और क़बूल न होने वाली दुआ़ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता हूं।'' (الزھد لابی داؤد، باب من خبر ابی الدّرداء، الحدیث: 224، ص201، مفھومًا)

एक रिवायत में है कि आप फ़रमाया करते कि ''मुझे सब से ज़ियादा इस बात का ख़ौफ़ है कि जब मैं क़ियामत के दिन ह़िसाब के लिये खड़ा होउं तो मुझ से कहा जाए : तुम ने इ़ल्म तो ह़ासिल किया लेकिन अपने इ़ल्म पर अ़मल क्यूं न किया ?'' (المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، باب کلام ابی الدّرداء، الحدیث: 19، ج8، ص169)

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! हलाकत है हलाकत ! अगर सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के ख़ौफ़े आख़िरत का येह आ़लम है कि वोह इस बात से डरा करते कि कहीं क़ियामत के दिन इन से येह न पूछ लिया जाए कि इ़ल्म तो ह़ासिल किया लेकिन अ़मल क्यूं न किया ? तो हमारा आ़लम क्या होगा ? मक़ामे ग़ौर है और येही नहीं बल्कि सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ तो येह भी फ़रमाया करते थे कि **ऐ काश !** मैं इन्सान के बजाए अपने घर वालों के लिये बकरी का एक बच्चा होता और जब उन के पास कोई मेहमान आता तो येह उस बकरी के बच्चे को ज़ब्ह़ कर लेते और ख़ुद भी खाते और मेहमानों को भी खिलाते। (الزھد لابن مبارک، باب تعظیم ذکر اللہ عزوجل، الحدیث: 238، ص80)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن और दूसरे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الۡمُبِیۡن के ह़िसाबे आख़िरत से डरने का येह आ़लम था कि वोह तमन्ना किया करते कि काश ! दुन्या में पैदा ही न होते। ऐ काश !

हमें भी ख़ौफ़े आख़िरत की दौलत नसीब हो जाए। हमारे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का इस बारे में क्या ही ख़ूब कलाम है, जिसे नज़्अ़ की सख़्तियों, क़ब्र की होल नाकियों, मह़शर की दुश्वारियों और जहन्नम की ख़ौफ़नाक वादियों का तसव्वुर बांध कर ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ते हुए अश्कबार आंखों से पढ़िये :

काश ! कि मैं दुन्या में पैदा न हुवा होता

काश ! कि मैं दुन्या में पैदा न हुवा होता
क़ब्रो ह़श्र का हर ग़म ख़त्म हो गया होता

आह ! सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है
काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता

आ के न फंसा होता मैं बत़ौरे इन्सां काश !
काश ! मैं मदीने का ऊंट बन गया होता

ऊंट बन गया होता और ईदे क़ुरबां में
काश ! दस्ते आक़ा से नहूर हो गया होता

काश ! मैं मदीने का कोई दुम्बा होता या
सींग वाला चितकब्रा मेंढा बन गया होता

तार बन गया होता मुर्शिदी के क़ुरते का
मुर्शिदी के सीने का बाल बन गया होता

दो जहां की फ़िक्रों से यूं नजात मिल जाती
मैं मदीने का सचमुच कुत्ता बन गया होता

काश ! ऐसा हो जाता ख़ाक बन के त़यबा की
मुस्त़फ़ा के क़दमों से मैं लिपट गया होता

फूल बन गया होता गुलशने मदीना का
काश ! उन के सह़रा का ख़ार बन गया होता

मैं बजाए इन्सां के कोई पौदा होता या
नख़्ल बन के त़यबा के बाग़ में खड़ा होता

गुलशने मदीना का काश ! होता मैं सब्ज़ा
या बत़ौरे तिन्का ही मैं वहां पड़ा होता

मर्ग़ ज़ारे त़यबा का काश ! होता परवाना
गिर्दे शम्अ़ फिर फिर कर काश ! जल गया होता

काश ! ख़र या ख़च्चर या घोड़ा बन कर आता और
आप ने भी खूंटे से बांध कर रखा होता

जां कनी की तक्लीफ़ें ज़ब्ह़ से हैं बढ़ कर काश !
मुर्ग़ बन के त़यबा में ज़ब्ह़ हो गया होता

आह ! कस्रते इस्यां हाए ! ख़ौफ़ दोज़ख़ का
काश ! इस जहां का मैं न बशर बना होता

शोर उठा येह मह़शर में ख़ुल्द में गया अ़त्तार
गर न वोह बचाते तो नार में गया होता (वसाइले बख़्शिश, स. 142)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कोई सुब्ह़ जाता है तो कोई शाम :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ जब कोई जनाज़ा देखते तो फ़रमाते : ''तुम सुब्ह़ को चल पड़े हम शाम को तुम्हारे पीछे आने वाले हैं।'' या फ़रमाते : ''तुम शाम को चले हम सुब्ह़ आने वाले हैं, मौत बहुत बड़ी नसीह़त है लेकिन ग़फ़्लत भी बहुत जल्द त़ारी हो जाती है और नसीह़त के लिये मौत ही काफ़ी है, मु-तक़द्दिमीन (या'नी सलफ़ सालिह़ीन) इस दुन्या से रुख़्सत हो चुके हैं और जो बा'द वाले हैं उन में ह़िल्म व बुर्द बारी नाम की कोई चीज़ नहीं।''

(الزھد لابی داؤد، باب من خبر الی الدرداء، الحدیث: 261، ص222)

सय्यिदुना अबू दरदा की तीन मह़बूब चीज़ें :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाया करते कि अगर तीन चीज़ें न होतीं तो मैं मौत को तरजीह़ देता। अ़र्ज़ की गई : ''वोह तीन चीज़ें कौन सी हैं ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''(1) दिन रात अपने रब عَزَّوَجَلَّ के ह़ुज़ूर सज्दे करना (2) सख़्त गरमी के दिनों में प्यासा रहना (या'नी रोज़े रखना) और (3) उन लोगों के ह़ल्क़ों में बैठना जो कलाम को उ़म्दा फलों की त़रह़ चुनते हैं।'' फिर फ़रमाया : ''कमाल द-रजे का तक़्वा येह है कि बन्दा एक ज़र्रे के मुआ़-मले में भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरे और जिस ह़लाल में ज़र्रा भर ह़राम का शुबा हो उसे तर्क कर दे, इस त़रह़ वोह अपने और ह़राम के दरमियान मज़्बूत़ आड़ बना लेगा। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मुक़द्दस कलाम में बन्दों के अन्जाम को बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया :

فَمَنۡ یَّعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٍ خَیۡرًا یَّرَهٗ ۝ وَ مَنۡ یَّعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا یَّرَهٗ ۝ (پ30، الزلزال: 7,8)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा।

इस लिये तुम किसी बुराई को मा'मूली न समझो और न ही किसी नेकी को

ह़क़ीर जानो।" (الزھد الکبیر للبیھقی، الحدیث:870، ص324)

और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ येह भी फ़रमाया करते कि तीन चीज़ें जिन्हें लोग ना पसन्द करते हैं मुझे बहुत मह़बूब हैं : (1) फ़क़्र (2) मरज़ और (3) मौत। (الزھد للامام احمد بن حنبل، باب زھد ابی الدَّرْدَاء، الحدیث:736، ص162، بتغیر)

एक रिवायत में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस की वजह बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि मैं दीदारे बारी तआ़ला के शौक़ की वजह से मौत को पसन्द करता हूं। और अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर गिड़गिड़ाने के लिये फ़क़्र को पसन्द करता हूं और बीमारी को इस लिये पसन्द करता हूं ताकि येह मेरे गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो। (المرجع السابق، الحدیث:811، ص172)

मह़ब्बत में अपनी गुमा या इलाही عَزَّوَجَلَّ

मह़ब्बत में अपनी गुमा या इलाही — न पाऊं मैं अपना पता या इलाही
मेरे अश्क बहते रहें काश हर दम — तेरे ख़ौफ़ से या ख़ुदा या इलाही
मेरे दिल से दुन्या की चाहत मिटा कर — कर उल्फ़त में अपनी फ़ना या इलाही
मेरा हर अ़मल बस तेरे वासिते हो — कर इख़्लास ऐसा अ़ता या इलाही
इबादत में गुज़रे मेरी ज़िन्दगानी — करम हो करम या ख़ुदा या इलाही
मुसल्मां है अ़त्तार तेरी अ़ता से — हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के नज़्दीक आ़लिम कौन ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इ़ल्म व अ़मल और अहले इ़ल्म से बहुत मह़ब्बत थी। आप से उ़-लमा की पहचान के बारे में बहुत से अक़्वाल मरवी हैं। चुनान्चे,

एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बन्दे के आ़लिम होने की पहचान बताते हुए इर्शाद फ़रमाया कि "अहले इ़ल्म ह़ज़रात के साथ उठना बैठना, इन

के साथ चलना फिरना और इन की मजालिस में शरीक होना आदमी के आ़लिम होने की अ़लामत है।'' (التاریخ الکبیر للبخاری، باب الشین، باب شریك، الحدیث: 2653، ج4، ص200، بتغیر)

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के इस फ़रमान से मा'लूम हुवा कि इ़ल्मी इज्तिमाआ़त में शरीक होने, उ़-लमा की बारगाह में हा़ज़िर रहने और इन की ख़िदमत की ब-र-कत से बन्दे को इ़ल्म की दौलत मिलती है। जिस के चोरी होने का डर और ख़ौफ़ होता है न छिन जाने का। लिहाज़ा हमें कोशिश करना चाहिये कि तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाएं ताकि इस माह़ोल की ब-र-कत से हफ़्तावार इज्तिमाआ़त में शरीक होने और हर माह तीन दिन सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में शरीक होने से हमारा सीना इ़ल्म के नूर से मदीना बन जाए।

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस म-दनी माह़ोल में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ ने हमें सिर्फ़ इ़ल्म की बातें सीखने सिखाने का ही ज़ेह्न नहीं दिया बल्कि इ़ल्म पर अ़मल की भी तरग़ीब दिलाई क्यूं कि आप सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के इस फ़रमान की अ़-मली तस्वीर हैं कि **''उस वक़्त तक कोई मुत्तक़ी नहीं बन सकता जब तक आ़लिम न बन जाए और उस वक़्त तक कोई इ़ल्म से आरास्ता नहीं हो सकता जब तक अपने इ़ल्म पर अ़मल न करे।''**

(سنن الدارمی، المقدمة، باب من قال العلم الخشیة وتقوی الله، الحدیث: 293، ج1، ص100، مفهوما)

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के इस फ़रमान से हमें येह **दो म-दनी फूल** मिलते हैं कि अ़मल से इ़ल्म निखरता है और इ़ल्म से तक़्वा पैदा होता है। गोया हमारे शैख़े त़रीक़त,

अमीरे अहले सुन्नत ने सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के इस फ़रमान को अपनी आंखों का सुरमा बना रखा है और येही वजह है कि आप का शुमार उन हस्तियों में होता है जो चराग़ ले कर ढूंडने से भी नहीं मिलतीं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ को तासीर की उस दौलत से नवाज़ा है कि जब आप बयान करते हैं तो आप دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ की प्यारी प्यारी बातें लोगों के दिलों में तासीर का तीर बन कर पैवस्त होती चली जाती हैं। क्यूं कि आप ने पहले अ़मल किया और फिर हमें तरग़ीब दी। आप دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ ने दाढ़ी रख कर जब हमें येह बताया कि दाढ़ी रखना शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बहुत ही प्यारी सुन्नत है तो हम ने भी फ़ौरन अपने चेहरों को सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इस सुन्नत से आरास्ता कर लिया। आप ने इ़मामा की प्यारी प्यारी सुन्नत पर अ़मल कर के जब हमें भी इस की तरग़ीब दिलाई तो हम ने इसे भी अपने सर का ताज बना लिया।

अल ग़रज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ को जिस सुन्नत का इ़ल्म ह़ासिल हुवा उस पर न सिर्फ़ आप ने ख़ुद भी अ़मल करने की कोशिश की बल्कि हमें भी उस पर अ़मल करने की तरग़ीब दी और हमें सिर्फ़ वोही बात बताई जिस पर आप دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ ने ख़ुद अ़मल किया। चुनान्चे, दुन्या व माले दुन्या को ख़ुद से दूर कर के दूसरों को इस से बे रग़बती का दर्स दिया। फ़िक्रे आख़िरत में ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ते हुए हमें भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से डरने की तरबिय्यत दी।

मेरा दिल पाक हो सरकार दुन्या की महब्बत से
मुझे हो जाए नफ़रत काश ! आक़ा मालो दौलत से
न दौलत दे न सरवत दे मुझे बस येह सआ़दत दे
तेरे क़दमों में मर जाऊं मैं रो रो कर मदीने में

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की इल्म से महब्बत

जब ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के विसाल इलल ह़क़ का वक़्त क़रीब आया तो उन से अ़र्ज़ की गई कि कुछ वसिय्यत कीजिये। उन्हों फ़रमाया : "बैठ जाओ !" फिर आप ने तीन मरतबा इर्शाद फ़रमाया कि जो इ़ल्म और ईमान की तलाश में रहता है आख़िर पा लेता है। चुनान्चे, इ़ल्म ह़ासिल करना हो तो सिर्फ़ चार बन्दों के पास जाना : सय्यिदुना अबू दरदा, सय्यिदुना सलमान फ़ारसी, सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द और सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन सलाम رِضۡوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن के पास।

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث معاذ بن جبل رضی اللہ تعالیٰ عنہ، الحدیث: 22165، ج8، ص257)

سُبۡحٰنَ اللّٰہ ! **मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो !** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को येह मरतबा ऐसे ही नहीं मिला। इस के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने सख़्त मेह़नत की, रात दिन इ़बादत व रियाज़त में मसरूफ़ रहे, हर वक़्त इ़ल्म ह़ासिल करने की कोशिश करते रहे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने दुन्यावी ऐ़शो इ़शरत की कभी परवाह न की और हमेशा आख़िरत की फ़िक्र में मुब्तला रहे।

ऐ काश ! सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की त़रह़ हमारा भी येह म-दनी ज़ेह्न बन जाए कि इ़ल्मे दीन सीखना है, इ़बादत करनी है, नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये राहे ख़ुदा में सफ़र करना है। चुनान्चे,

सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ और नेकी की दा'वत

जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ मुल्के शाम के शहर दिमश्क़ पहुंचे तो आप ने देखा कि वहां के लोग नाज़ व निअ़म की ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं और

आसाइश व आराम के दिलदादा हैं । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ उन के अन्दाज़े ज़िन्दगी देख कर कि वोह दुन्या की महब्बत में गिरिफ़्तार हैं बहुत परेशान रहते। ऐसे कई वाक़िआ़त मिलते हैं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने दिमश्क़ के लोगों को जम्अ़ कर के एक इज्तिमाअ़ किया । (जैसे दा'वते इस्लामी आ़शिक़ाने रसूल पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए जम्अ़ कर के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ का एहतिमाम करती है) और फिर खड़े हो कर आप ने उन शु-रकाए इज्तिमाअ़ को नेकी की दा'वत पेश की। चुनान्चे,

एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने ऐसे ही एक इज्तिमाअ़ में फ़रमाया : ऐ अहले दिमश्क़ ! तुम सब दीन में इस्लामी भाई, घरों में एक दूसरे के पड़ोसी और दुश्मन के मुक़ाबले में एक दूसरे के मुआ़विन व मददगार हो, फिर क्या वजह है कि तुम मुझ से महब्बत नहीं करते ? मेरी मेहनत व मशक़्क़त तुम्हारे इलावा दूसरों पर सर्फ़ हो रही है, मैं तुम्हारे उ़-लमा को दुन्या से रुख़्सत होते देख रहा हूं और येह भी देख रहा हूं कि तुम्हारे बे इ़ल्म, इ़ल्म ह़ासिल नहीं करते। तुम रिज़्क़ की तलाश में अपनी आख़िरत भूले बैठे हो। सुनो ! एक क़ौम ने मज़्बूत़ महल्लात ता'मीर किये, कसीर माल इकठ्ठा किया और लम्बी लम्बी उम्मीदें बांधीं मगर वोही महल्लात उन की क़ब्रों में तब्दील हो गए, उन की उम्मीदों ने उन्हें धोके में डाला और उन का माल ज़ाएअ़ हो गया, ख़बरदार ! इ़ल्म ह़ासिल करो क्यूं कि इ़ल्म सिखाने और सीखने वाला अज्र में बराबर हैं और इन दोनों के इ़लावा किसी शख़्स में भलाई नहीं।

(حلیۃ الاولیاء، الرقم35ابی الدّرداء، الحدیث:695، ج1، ص273)

हुए नामवर बे निशां कैसे कैसे
ज़मीं खा गई नौ जवां कैसे कैसे
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का ख़ौफ़े ख़ुदा और दुन्या से बे रग़बती दिलाने वाला बयान सुन कर लोग दहाड़ें मार मार कर रोने लगते, आप का बयान इस क़दर सोज़ो गुदाज़ वाला होता जो तासीर का तीर बन कर शु-रकाए इज्तिमाअ़ के दिलों में पैवस्त होता चला जाता। उन की हिचकियां बंध जातीं, दुन्या से बे रग़बती का जज़्बा उन के दिलों में पैदा होने लगता।

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! आइये ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की इस नेकी की दा'वत पर ग़ौर करें, हम भी तो माल जम्अ़ करने में लगे हुए हैं, हम ने भी तो दुन्या की आसाइशों को जम्अ़ करना शुरूअ़ कर रखा है। ज़रा ग़ौर तो करें कि कहां गए वोह लोग और वोह क़ौमें जिन के रो'ब व दबदबे की दास्तानें हम किताबों में पढ़ते हैं ? येह सब क़ौमें कहां गईं ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूलों को झुटलाने वाले लोग कहां चले गए ?

जान लीजिये कि उन्हें सफ़्ह़ए हस्ती से मिटा दिया गया, किसी पर आस्मान से पथ्थर बरसाए गए, तो किसी को तूफ़ान बहा ले गया। क़ुरआने मजीद में उन सारी क़ौमों के वाक़िआ़त लिखे हुए हैं। हमें डराया जा रहा है। **ऐ काश !** हम डरने वाले बन जाएं, समझने वाले बन जाएं, नसीह़त क़बूल करने वाले बन जाएं। **ऐ काश !** हमें ऐसी आंख, ऐसा दिल, ऐसी सोच और ऐसा तफ़क्कुर नसीब हो जाए कि हम नसीह़त क़बूल करने वाले बन जाएं।

मत गुनाहों पे हो भाई बेबाक तू — भूल मत येह ह़क़ीक़त कि है ख़ाक तू
थाम ले दामने शाहे लौलाक तू — सच्ची तौबा से हो जाएगा पाक तू
जो भी दुन्या से आक़ा का ग़म ले गया — वोह तो बाज़ी ख़ुदा की क़सम ले गया
साथ में मुस्त़फ़ा का करम ले गया — ख़ुल्द की वोह सनद ला जरम ले गया

(वसाइले बख़्शिश, स. 356)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"नेकी की दा'वत" के (10) हुरूफ़ की निस्बत से सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मन्क़ूल (10) म-दनी फूल

(1)..... एक शख़्स ने जंग पर जाने से क़ब्ल हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "ऐ अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ! मुझे कुछ नसीहत फ़रमाइये ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इर्शाद फ़रमाया : " **ख़ुशी की हालत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को याद रखोगे** तो वोह तुम्हें तुम्हारी मुसीबत व तंगी के वक़्त याद रखेगा और जब कोई दुन्यावी चीज़ तुम्हें अच्छी लगे तो उसे इख़्तियार करने से पहले उस का अन्जाम सोच लेना ।"

(سیر اعلام النبلاء، الرقم 164 ابو الدّرداء، ج4، ص22)

(2)..... जो खाने पीने की ने'मत के सिवा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की दूसरी ने'मतों को नहीं पहचानता उस का अ़मल थोड़ा हो जाता है और उसे तकालीफ़ का सामना रहता है और जो दुन्या के पीछे भागता है दुन्या उस के हाथ नहीं आती ।

(حلیۃ الاولیاء، الرقم 35 ابی الدّرداء، الحدیث: 678، ج1، ص270)

(3)..... जब तक तुम नेक लोगों से महब्बत रखोगे भलाई पर रहोगे और तुम्हारे बारे में जब कोई हक़ बात बयान की जाए तो उसे मान लिया करो कि हक़ को पहचानने वाला उस पर अ़मल करने वाले की त़रह़ होता है ।

(شعب الایمان للبیہقی، باب فی مقاربۃ و مودۃ۔۔۔ الخ، الحدیث: 9063، ج6، ص503، بتغیر)

(4)..... ईमान का आ'ला द-रजा येह है कि बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म पर सब्र करे, तक़्दीर पर राज़ी रहे, तवक्कुल के मुआ-मले में इख़्लास अपनाए और हर वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमां बरदार रहे ।

(الزھد لابن المبارک، ما رواہ نعیم بن حماد فی نسختہ زائدا، باب فی الرضا بالقضاء، الحدیث: 123، ص31)

(5)..... ऐ लोगो ! क्या बात है तुम दुन्या के ह़रीस बनते जा रहे हो और जिस

(दीन) का तुम्हें निगह्बान बनाया गया है उसे ज़ाएअ़ कर रहे हो ? मैं तुम्हारे शरीर लोगों से आगाह हूं जो घुड़ सुवारी करते हुए अकड़ते हैं, नमाज़ों में सुस्ती करते हैं, क़ुरआने मजीद तवज्जोह से नहीं सुनते और न ही ग़ुलामों को आज़ाद करने में रग़बत रखते हैं।

(المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام ابی الدَّرْدَاء، الحدیث:26، ج8، ص170)

(6)..... एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से अ़र्ज़ की, कि मुझे कोई ऐसी बात सिखा दीजिये जिस पर अ़मल करने से मैं नफ़्अ़ पाऊं। तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : "दो, तीन, चार और पांच बातें हैं जो इन पर अ़मल करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां उस के द-रजात बुलन्द होंगे : ह़लाल व त़य्यिब कमाओ और ह़लाल व त़य्यिब ही खाओ और अपने घर में भी ह़लाल व त़य्यिब ही दाख़िल करो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुवाल करो कि वोह तुम्हें रोज़ाना का रिज़्क़ रोज़ाना अ़त़ा फ़रमाए और जब सुब्ह़ करो तो अपने आप को मुर्दों में शुमार करो गोया तुम उन से मिल गए हो, अपनी इ़ज़्ज़त व आबरू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द कर दो और जो शख़्स तुम्हें गाली दे, बुरा भला कहे या तुम से झगड़ा करे उस का मुआ़-मला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर छोड़ दो और जब तुम से कोई बुराई सरज़द हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस्तिग़्फ़ार करो।"

(حلیۃ الاولیاء، الرقم35ابوالدرداء، الحدیث: 704، ج1، ص275)

(7)..... इन्सान के कामिल होने की तीन निशानियां हैं : (1) मुसीबत के वक़्त शिक्वा न करना (2) अपनी तक्लीफ़ सब को न बताना और (3) अपने मुंह मियां मिठ्ठू न बनना। (الزھد للامام احمد بن حنبل، زھد ابی الدَّرْدَاء، الحدیث:773، ص166)

(8)..... तेरा दोस्त तुझ पर इ़ताब करे येह इस से बेहतर है कि वोह तुझ से दूर रहे। तेरे दोस्त से बढ़ कर कौन तेरा ख़ैर ख़्वाह होगा ? अपने दोस्त का सुवाल पूरा कर और उस के मुआ़-मले में नरमी इख़्तियार कर और उस के बारे में किसी ह़ासिद की बात पे यक़ीन न कर। वरना तू भी उसी की मिस्ल अपने दोस्त से ह़सद करने लग जाएगा, फिर जब कल तेरी मौत आएगी तो वोह तुझ से मुंह

फैर लेगा और तुम उस शख़्स की मौत के बा'द क्यूं रोते हो जिस से ज़िन्दगी में मिलना भी गवारा नहीं करते थे ? (حلیۃ الاولیاء، الرقم35ابودَرْدَاء، الحدیث:705، ج1، ص276)

﴿9﴾..... आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने एक बार इर्शाद फ़रमाया : ''बन्दे को इस बात से ख़ौफ़ज़दा रहना चाहिये कि कहीं मुसल्मानों के दिलों में इस की नफ़रत न डाल दी जाए और इसे मा'लूम तक न हो।'' फिर दरयाफ़्त फ़रमाया : ''जानते हो ऐसा क्यूंकर होता है ?'' अ़र्ज़ की गई : ''नहीं मा'लूम।'' तो इर्शाद फ़रमाया : ''बन्दा तन्हाई में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करता रहता है जिस की वजह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुसल्मानों के दिलों में उस की नफ़रत डाल देता है और उसे मा'लूम नहीं होता।''

(الزھد لابی داؤد، باب من خبر الی الدَّرْدَاء، الحدیث:220، ج1، ص236، مختصراً)

﴿10﴾..... जिन लोगों की ज़बानें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहती हैं, उन में से हर शख़्स मुस्कराता हुवा जन्नत में दाख़िल होगा।

(الزھد للامام احمد بن حنبل، باب زھد ابی الدَّرْدَاء، الحدیث۷۲۶، ص۱۶۱)

सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की नेकी दा'वत से महब्बत

ईमान की ह़लावत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ एक बार मदीना शरीफ़ ह़ाज़िर हुए तो लोगों को मुख़ात़ब कर के इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अहले मदीना ! मुझे ऐसा क्यूं लग रहा है कि मैं तुम में ईमान की ह़लावत नहीं पा रहा। मेरी जान की क़सम ! अगर जंगली जानवर भी ईमान का ज़ाएक़ा चख ले तो उस पर भी ह़लावते ईमान के अ-सरात नज़र आने लगें।''

(الزھد لابن مبارك، باب فضل ذكر الله عزوجل، الحدیث:1547، ج1، ص541)

गुनहगार से नहीं, गुनाह से नफ़रत :

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ एक शख़्स के पास से गुज़रे जिसे लोग उस के गुनाहों में मुब्तला होने की वजह से बुरा भला

कह रहे थे, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने उन लोगों से इर्शाद फ़रमाया : ''ज़रा येह बताओ ! अगर तुम इस शख़्स को किसी कूंएं में गिरा हुवा पाते तो क्या इसे निकालने की कोशिश न करते ?'' लोगों ने अ़र्ज़ की ''जी हां ! ज़रूर करते।'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : ''अपने भाई को गालियां न दो बल्कि इस बात पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करो कि उस ने तुम्हें इस गुनाह से आ़फ़िय्यत बख़्शी है।'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''क्या आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इसे बुरा नहीं समझते ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''मैं इस के अ़मल को बुरा समझता हूं, अगर येह उसे छोड़ देगा तो मेरा भाई है।''

(شعب الإیمان للبیہقی، باب فی تحریم أعراض الناس، الحدیث: 6691، ج5، ص290)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को नेकी की दा'वत से बहुत प्यार था, आप हर मुनासिब मौक़अ़ से ज़रूर फ़ाएदा उठाते। चुनान्चे, आप के इस वाक़िए़ से कितना प्यारा सबक़ मिलता है कि गुनाहगार से नहीं गुनाह से नफ़रत करना चाहिये, क्यूं कि अगर गुनाहगार से नफ़रत करेंगे तो वोह कभी भी आप की नेकी की दा'वत क़बूल नहीं करेगा। बल्कि आप को देख कर रास्ता तब्दील कर लेगा। तो फिर नेकी की दा'वत कैसे आ़म होगी ? तो प्यारे इस्लामी भाइयो ! गुनाहगारों से नफ़रत के बजाए उन्हें अपना बनाने की कोशिश कीजिये ताकि वोह भी म-दनी माहो़ल की ब-र-कत से महरूम न रहें। चुनान्चे,

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 32 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले, ''**क़ातिल, इमामत के मुसल्ले पर**'' सफ़हा 4 ता 6 पर है : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** उ़मूमन क़ुरआनो सुन्नत की ता'लीम से बे बहरा लोग ही नफ़्सो शैत़ान के बहकावे में आ कर क़त्लो ग़ारत गरी, दहशत गर्दी, तोड़फोड़, चोरी, डकैती, ज़िनाकारी, मुनश्शियात फ़रोशी

और जूआ वग़ैरा जैसे घिनावने जराइम में मुब्तला हो कर बिल आख़िर जेल की चार दीवारी में मुक़य्यद हो जाते हैं। اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ क़ैदियों की ता'लीम व तरबिय्यत के लिये जेलख़ानों में भी दा'वते इस्लामी की मजलिस **"फ़ैज़ाने क़ुरआन"** के ज़रीए म-दनी काम की तरकीब है।

जेलख़ाना जात में दा'वते इस्लामी के म-दनी काम का आग़ाज़ कुछ इस त़रह़ हुवा कि चन्द साल क़ब्ल एक क़ैदी जेल से रिहाई पाने के बा'द शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और कुछ यूं अ़र्ज़ की, कि आज़ाद दुन्या की त़रह़ हमारी जेलों का भी माह़ोल कुछ ऐसा है कि क़ैदी सुधरने और तौबा करने के बजाए गुनाहों की दलदल में मज़ीद धंसता चला जाता है लिहाज़ा जेल के अन्दर नेकी की दा'वत आ़म करने की बहुत ज़रूरत है। उस के येह जज़्बात सुन कर उम्मत के अ़ज़ीम ख़ैर ख़्वाह अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ ने आज़ाद इस्लामी भाइयों की त़रह़ क़ैदियों में भी दा'वते इस्लामी का म-दनी काम शुरूअ़ करने का फ़ैसला फ़रमाया चुनान्चे दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के तह़्त मजलिसे फ़ैज़ाने क़ुरआन बनी जो जेलख़ाना जात में नेकी की दा'वत आ़म करने में मसरूफ़ है। اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी काम की जेलख़ाना जात में ख़ूब बहारें हैं, कई डाकू और जराइम पेशा अफ़राद जेल के अन्दर होने वाले म-दनी कामों से मु-तअस्सिर हो कर ताइब हो जाते हैं और रिहाई पाने के बा'द आ़शिक़ाने रसूल के साथ म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बनने और सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने की सआ़दत पाते हैं, आ-तर्शीं अस्लिह़े के ज़रीए अंधाधुंद गोलियां बरसाने वाले अब सुन्नतों के म-दनी फूल बरसा रहे हैं। चुनान्चे,

म-दनी म़ह़बूब की ज़ुल्फ़ों का असीर :

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़

1548 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, ''**फ़ैज़ाने सुन्नत**'' सफ़हा 368 पर शैख़े त़रीक़त, अमीर अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : दा'वते इस्लामी के वसीअ़ दाइरए कार को ब हुस्नो ख़ूबी चलाने के लिये मुख़्तलिफ़ मुल्कों और शहरों में मु-तअ़द्दद मजालिस बनाई जाती हैं । **मिन जुम्ला** मजलिसे राबित़ा बिल उ़-लमा-इ वल मशाइख़ भी है जो कि अक्सर उ़-लमाए किराम पर मुश्तमिल है । इस मजलिस के इस्लामी भाई मश्हूर दीनी दर्सगाह जामिआ़ राशिदिय्या (पीर जो गोठ बाबुल इस्लाम सिन्ध) तशरीफ़ ले गए ।

बर सबीले तज़्किरा जेलख़ानों में दा'वते इस्लामी के म-दनी काम की बात चली तो वहां के शैख़ुल ह़दीस साहिब कुछ इस त़रह़ फ़रमाने लगे : ''जेलख़ानों के म-दनी काम की ताबनाक म-दनी कारकर्दगी मैं ख़ुद आप को सुनाता हूं, पीर जो गोठ के नवाह़ में एक डाकू ने तबाही मचा रखी थी, मैं उस को जानता था, आए दिन पोलीस के साथ उस की आंख मिचोली जारी रहती, कई बार गिरिफ़्तार भी हुवा मगर अ-सरो रुसूख़ इस्ति'माल कर के छूट गया । आख़िरश किसी जुर्म की पादाश में बाबुल मदीना कराची की पोलीस के हथ्थे चढ़ गया, सज़ा हुई और जेल में चला गया । सज़ा काट लेने के बा'द रिहाई मिलने पर मुझ से मिलने आया । मैं पहली नज़र में उस को पहचान न सका क्यूं कि मैं ने इस को दाढ़ी मुन्डा और सर बरह्ना देखा था मगर अब इस के चेहरे पर मीठे मीठे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की निशानी नूरानी दाढ़ी जगमगा रही थी, सर पर सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ का ताज अपनी बहारें लुटा रहा था, पेशानी पर नमाज़ों का नूर नुमायां नज़र आ रहा था । मेरी ह़ैरत का त़िलिस्म तोड़ते हुए वोह बोला, क़ैद के दौरान जेल के अन्दर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे दा'वते इस्लामी का म-दनी माह़ोल मुयस्सर आ गया और आ़शिक़ाने

रसूल की इन्फ़िरादी कोशिश की ब-र-कत से मैं ने गुनाहों की बेड़ियां काट कर अपने आप को म-दनी महबूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ुल्फ़ों का असीर बना लिया।''

रह़मतों वाले नबी के गीत जब गाता हूं मैं
गुम्बदे ख़ज़रा के नज़्ज़ारों में खो जाता हूं मैं
जाऊं तो जाऊं कहां मैं किस का ढूंडूं आसरा
लाज वाले लाज रखना तेरा कहलाता हूं मैं

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के ''नेकी की दा'वत'' पर मुश्तमिल दो मक्तूब :

(1)..... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की त़रफ़ एक मक्तूब रवाना फ़रमाया, जिस में लिखा : **ऐ मेरे भाई !** अपनी सिह़्ह़त व फ़राग़त को ग़नीमत जानो, इस से पहले कि तुम पर ऐसी मुसीबत नाज़िल हो जिस को मख़्लूक़ दूर न कर सके और मुसीबत ज़दा की दुआ को ग़नीमत समझो। **ऐ मेरे भाई !** मस्जिद को (इ़बादत के लिये) अपना घर बना लो क्यूं कि मैं ने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना है : ''मस्जिद हर मुत्तक़ी का घर है।'' और जो लोग मसाजिद को अपना घर बना लेते हैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन से राह़त व आराम और पुल सिरात़ से सलामती के साथ गुज़ार कर अपनी रिज़ा तक पहुंचाने का वा'दा फ़रमाया है। **ऐ मेरे भाई !** यतीम पर रह़्म करो, उसे अपने क़रीब करो और अपने खाने से उसे खिलाओ क्यूं कि एक बार शहन्शाहे अबरार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे दुरबार में एक शख़्स ने क़सावते क़ल्बी (दिल की सख़्ती) की शिकायत की तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या तुम अपने दिल को नर्म

करना चाहते हो ?'' अ़र्ज़ की : ''जी हां।'' इर्शाद फ़रमाया : ''यतीम को अपने क़रीब करो, उस के सर पर हाथ फैरो और अपने खाने से उसे खिलाओ कि येह चीज़ें दिल को नर्म करती हैं और ह़ाजात के पूरा होने का भी ज़रीआ़ हैं।'' **ऐ मेरे भाई !** इतना माल इकठ्ठा न करो कि जिस का शुक्र अदा न कर सको, बेशक मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : ''क़ियामत के दिन एक ऐसे मालदार को लाया जाएगा जिस ने माल के मुआ़-मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी की होगी, वोह इस ह़ाल में आएगा कि वोह आगे और उस का माल उस के पीछे होगा, पुल सिरात़ पर जब भी कोई रुकावट आएगी तो उस का माल उसे कहेगा : ''चलो ! चलो ! तुम ने माल में अपना ह़क़ अदा किया है।'' फिर एक ऐसे मालदार को लाया जाएगा जिस ने माल के मुआ़-मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त न की होगी, वोह इस ह़ाल में आएगा कि उस का माल उस के कन्धों के दरमियान होगा और वोह उसे फिसलाएगा और कहेगा : ''तेरी हलाकत हो ! तूने मेरे मुआ़-मले में क्यूं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त नहीं की ?'' वोह इसी त़रह़ कहता रहेगा ह़त्ता कि हलाक्त की दुआ़ मांगेगा।'' **ऐ मेरे भाई !** मुझे मा'लूम हुवा है कि तूने एक ख़ादिम ख़रीदा है, मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है कि ''बन्दा जब तक किसी ख़ादिम से मदद नहीं लेता **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़रीब होता रहता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उस के क़रीब होता है और जब वोह किसी ख़ादिम से ख़िदमत लेता है तो उस पर उस का ह़िसाब लाज़िम हो जाता है।'' मेरी ज़ौजा ने मुझ से एक ख़ादिम रखने का मुत़ा-लबा किया था लेकिन ह़िसाब के ख़ौफ़ से मैं ने इसे ना पसन्द जाना ह़ालां कि मैं उन दिनों मालदार था। **ऐ मेरे भाई !** अगर हम से पूरा पूरा ह़िसाब लिया गया तो बरोज़े क़ियामत मेरा और तेरा मददगार कौन होगा ? **ऐ मेरे भाई ! रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

का सहाबी होने की वजह से धोके में न रहना, बेशक हम हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द एक त़वील अ़र्सा ज़िन्दा रहे हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही जानता है कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द हमें किन किन ह़ालात का सामना करना पड़ा। (حلیۃ الاولیاء، الرقم35ابو دَرْدَاء، الحدیث: 702، ج1، ص274)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मसाजिद इ़बादत के लिये बनाई जाती हैं न कि सोने और खाने पीने के लिये। मस्जिद को मुत्तक़ीन का घर कहने की वजह येह है कि मुत्तक़ीन आदाबे मस्जिद का लिह़ाज़ रखते हैं और हर वक़्त इ़बादत में मसरूफ़ रहते हैं और कोशिश करते हैं कि इन का ज़ियादा तर वक़्त मस्जिद ही में गुज़रे जैसा कि अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा का तमाम वक़्त मस्जिदे न-बवी में गुज़रता और वोह हर वक़्त मस्नून इ़बादत या'नी नमाज़ या ज़िक्रो फ़िक्र और तिलावत वग़ैरा में मसरूफ़ रहते। थक जाते या नींद ग़ालिब आती तो घुटनों पर सर रख कर बैठे बिठाए थोड़ी देर आराम कर लिया करते। (المدخل لابن الحاج، ج1، ص212، مفهوماً)

(2)..... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अपने एक दोस्त को मक्तूब लिखा जिस में ह़म्दो सना के बा'द फ़रमाया : ''इस दुन्या में तेरा कोई ह़िस्सा नहीं है क्यूं कि तुझ से पहले भी लोग यहां रहते थे जो इसे यूंही छोड़ कर चले गए और तेरे बा'द भी इस में कुछ और लोग आ बसेंगे, इस दुन्या में तेरे लिये वोही है जो तू आगे भेज दे और जो चीज़ें तू यहां छोड़ जाएगा उस की ह़क़दार तेरी नेक औलाद होगी क्यूं कि मरने के बा'द तेरी पेशी ऐसी बारगाह में होनी है जहां कोई बहाना चलेगा न उ़ज़्र क़ाबिले क़बूल होगा और तुम जिन के लिये दुन्या इकठ्ठी करोगे वोह तुम्हारे काम न आ सकेंगे। तुम्हारा जम्अ़ किया हुवा माल तुम्हारी औलाद के लिये है, वोह इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़त़ाअ़त कर के सआ़दत मन्द हो जाएगी जिस को कमाने की वजह से तुम बद बख़्त बने या वोह उस माल को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में ख़र्च कर के बद बख़्त हो जाएगी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इन दोनों में से कोई भी ऐसा मुआ़-मला

नहीं कि जिस की वजह से तुम अपनी कमर पर बोझ उठाओ और उन्हें अपनी ज़ात पर तरजीह़ दो लिहाज़ा जो गुज़र गए उन के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत की उम्मीद रखो और जो पीछे रह गए उन के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रिज़्क़ पर ए'तिमाद करो।'' **वस्सलाम !** (تاریخ دمشق لابن عساکر، ج47، ص169، مفہومًا)

मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के नेकी की दा'वत पर मुश्तमिल इन दो मक्तूबात से मा'लूम होता है कि मक्तूबात के ज़रीए नेकी की दा'वत देना सह़ाबए किराम का त़रीक़ा है और येह सिर्फ़ सह़ाबए किराम ही का त़रीक़ा नहीं बल्कि सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से भी येह साबित है कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुख़्तलिफ़ लोगों को नेकी की दा'वत पर मुश्तमिल मक्तूब रवाना फ़रमाया करते थे। चुनान्चे, तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** ने ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम की इस प्यारी प्यारी सुन्नत पर अ़मल करने के लिये एक मजलिस बनाम **''मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या''** क़ाइम कर रखी है। जो दौरे जदीद के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ मक्तूबात वग़ैरा के ज़रीए **नेकी की दा'वत** आ़म करने की ख़िदमत में ह़िस्सा ले रही है। इस मजलिस के तह़्त रोज़ाना उन बे शुमार मक्तूबात, ई मेइल्ज़ (Emails) और परचियों के जवाबात दिये जाते हैं जो परेशान ह़ाल और दुखी इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें अमीरे अहले सुन्नत को लिखते हैं। इन तमाम मक्तूबात वग़ैरा को पढ़ने और फिर उन के जवाब जारी करने के लिये **मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के म-दनी अ़मले की कोशिश होती है कि जल्द से जल्द जवाब दिया जा सके। चुनान्चे, जनवरी 2010 ई. तक इस मजलिस के तह़्त पाकिस्तान के चारों सूबों के सेंकड़ों शहरों में कमो बेश 400 के क़रीब बस्तों के साथ साथ पाकिस्तान के

बाहर 150 से ज़ाइद मक़ामात में ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या के बस्तों पर सेंकड़ों इस्लामी भाई दुखी इन्सानिय्यत की ग़म ख़्वारी करते हुए दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों को फ़रोग़ देने में मसरूफ़ हैं और ता दमे तह़रीर इस मजलिस के तह़्त सिर्फ़ पाकिस्तान में माहाना 36157 मक्तूब और 99142 मरीज़ों को माहाना 318177 अवरादो वज़ाइफ़ और ता'वीज़ात देने का सिल्सिला रहता है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सब को भी नेकी की दा'वत देने वाला बना दे, **मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो !** अगर हम ने अपनी ज़िम्मादारी को समझ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में डूब कर इस म-दनी काम का बीड़ा उठा लिया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के प्यार की ब-र-कत से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारा दोनों जहां में बेड़ा पार होगा :

हम को अल्लाह और नबी से प्यार है اِنْ شَآءَاللّٰہ *अपना बेड़ा पार है*

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की ब-र-कत से दुन्या व आख़िरत की बे बहा सआ़दतें मिलती हैं। चुनान्चे,

आप की तरग़ीब के लिये एक म-दनी बहार पेशे ख़िदमत है। पाकिस्तान के सूबा पंजाब के एक इस्लामी भाई का बयान है कि मैं दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में तरबिय्यती कोर्स के लिये आया हुवा था। इस दौरान एक दिन जुमा'रात को सुब्ह़ तक़रीबन 4 बजे पेट के बाईं जानिब अचानक दर्द उठा, दर्द इस क़दर शदीद था कि सात इन्जेक्शन लगे, तब आराम आया। ह़स्बे मा'मूल जुमा'रात को होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ के लिये म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में शाम को ह़ाज़िर हुवा। रात दस बजे फिर दर्द शुरूअ़ हुवा मगर इज्तिमाअ़ में मांगी जाने वाली इज्तिमाई दुआ़ के वक़्त ठीक हो गया एक घन्टे बा'द फिर बहुत शदीद दर्द उठा

डॉक्टर ने तीन इन्जेक्शन लगाए, फिर कुछ इफ़ाक़ा हुवा। दिन चढ़ते ही अल्ट्रा साउन्ड भी करवाया। मगर डॉक्टरों को दर्द का सबब समझ में न आया। मैं हस्पताल में पड़ा था वहां मुझे मा'लूम हुवा कि मेरे साथ वाले इस्लामी भाई जो तरबिय्यती कोर्स में आए थे वोह सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले में बारह दिन के लिये सफ़र की तय्यारी कर रहे हैं। डॉक्टर ने सफ़र से बहुत रोका। मगर मुझ से न रहा गया मैं डेरा बुग्टी बलूचिस्तान जाने वाले म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। डेरा बुग्टी जाते हुए रास्ते में थोड़ा सा दर्द हुवा। फिर वहां से मैं ने बलूचिस्तान के एक दूसरे शहर सूई में जुमा'रात के सुन्नतों भरे हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में शिर्कत की। और फिर डेरा बुग्टी वापस आ गए। म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत से दर्द ऐसा दूर हुवा गोया कभी था ही नहीं। और اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ ता हाल मुझे दोबारा तक्लीफ़ नहीं हुई। और सब से बड़ी सआ़दत येह मिली कि मुझे म-दनी क़ाफ़िले में ख़्वाब के अन्दर म-दनी ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार हो गया।

है त़लब दीद की, दीद की ईद की
क्या अ़जब वोह दिखें क़ाफ़िले में चलो
लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो
सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
त़यबा की जुस्त-जू, ह़ज की गर आरज़ू
है बता दूं तुम्हें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की करामात

(1)..... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की त़रफ़ (या ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ उन की त़रफ़) ख़त़ लिखते तो उन्हें पियाले वाला वाक़िआ़ याद दिलाते। रावी

उस वाक़िए़ की त़रफ़ इशारा करते हुए कहते हैं कि एक मरतबा येह दोनों बुज़ुर्ग पियाले में खाना खा रहे थे कि उस पियाले और उस में मौजूद खाने ने इन के सामने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ बयान की।

(فوائد أبي علی بن أحمد بن الحسن الصواف، اول الکتاب، ص49)

(2)..... एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ हंडिया के नीचे आग जला रहे थे और ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ भी पास मौजूद थे। अचानक ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने हंडिया से आवाज़ सुनी, आवाज़ बुलन्द हुई वोह इस त़रह़ तस्बीह़ बयान कर रही थी जिस त़रह़ बच्चा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ बयान करता है। इस के बा'द वोह हंडिया अपनी जगह से हटी और दोबारा ख़ुद बख़ुद अपनी जगह पहुंच गई और उस से कोई चीज़ भी न गिरी, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को आवाज़ दे कर फ़रमाया : "ऐ सलमान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) ! येह अ़जीब मन्ज़र देखें ! ऐसा मन्ज़र आप ने देखा होगा न आप के वालिद ने।" ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : "अगर आप ख़ामोश रहते तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इस से बड़ी बड़ी निशानियां देखते।"

(المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الزهد، کلام ابی الدرداء، الحدیث: 18، ج8، ص169)

सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की दुआ :

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ अक्सर अपने परवर्द गार लम यज़ल से येह दुआ मांगा करते थे :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَسۡاَلُکَ حُبَّکَ وَ حُبَّ مَنۡ یُّحِبُّکَ وَالۡعَمَلَ الَّذِیۡ یُبَلِّغُنِیۡ حُبَّکَ، اَللّٰھُمَّ اجۡعَلۡ حُبَّکَ اَحَبَّ اِلَیَّ مِنۡ نَّفۡسِیۡ وَ اَھۡلِیۡ وَ مِنَ الۡمَاءِ الۡبَارِدِ۔

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से तेरी, तेरे चाहने वालों की और हर उस

अ़मल की महब्बत मांगता हूं जो मुझे तेरी महब्बत तक पहुंचा दे, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपनी महब्बत को मेरे नज़्दीक मेरी जान, मेरे घर वालों और ठन्डे पानी से भी ज़ियादा महबूब बना दे । (جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب دعاء داود علیہ السلام۔ الخ، الحدیث:3501، ج5، ص296)

मीठे मीठे और प्यारे इस्लामी भाइयो ! जो लोग सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की त़रह़ दुन्या में अपनी ज़िन्दगियां गुज़ारते हैं, जिन के पेशे नज़र हमेशा अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशी व रिज़ा होती है तो उन का रब عَزَّوَجَلَّ भी उन पर अपनी रह़मतों, ब-र-कतों और ने'मतों के ख़ज़ाने खोल देता है । चुनान्चे,

बे मिसाल जन्नती ने'मतें :

ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : "मैं ने ख़्वाब में एक गन्दुमी रंग का क़ुब्बा (या'नी गुम्बद) देखा जिस के इर्द गिर्द सब्ज़ चरागाह में बकरियां चर रही थीं, तो पूछा : "येह किस का है ?" जवाब मिला : "येह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का है ।" रावी कहते हैं : "कुछ देर बा'द सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ख़ुद उस क़ुब्बे से निकले और मुझ से फ़रमाया : "ऐ औ़फ़ ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें येह सब कुछ क़ुरआने मजीद की तिलावत का अज्र अ़त़ा फ़रमाया है और अगर तुम उस टीले पर चढ़ कर देखो तो वहां ऐसी ऐसी ने'मतें पाओगे कि उन की मिस्ल तुम्हारी आंखों ने कभी देखीं न तुम्हारे कानों ने कभी उन का तज़्किरा सुना, और न ही तुम्हारे दिल में कभी उन का ख़याल गुज़रा, और येह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के लिये तय्यार की हैं क्यूं कि उन्हों ने दुन्या को इन राह़तों के लिये छोड़ दिया ।"

(الزھد للامام احمد بن حنبل، باب زھد ابی الدرداء، الحدیث:714، ص159، بتغیر)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الۡاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

المآخذ والمراجع

1- صحيح البخاري: الإمام أبوعبد الله محمد بن إسماعيل البخاري المتوفي 256ھ دارالكتب العلمية بيروت.

2- صحيح المسلم: الإمام أبو الحسين مسلم بن الحجاج القشيري المتوفي261 ھ دار ابن حزم.

3- سنن ابن ماجه: الإمام أبوعبد الله محمد بن يزيد بن ماجه المتوفي273ھ دار المعرفة بيروت.

4- سنن أبي داؤد: الإمام ابوداؤد سليمان بن الأشعث السجستاني المتوفي 275 ھ دار إحياء التراث العربي بيروت.

5- سنن الترمذي:الإمام أبوعيسى محمد بن عيسى الترمذي المتوفي279 ھ دار الفكر بيروت.

6- سنن النسائي: الإمام أبوعبد الرحمن أحمد بن شعيب النسائي المتوفي 303 ھ دار الكتب العلمية بيروت.

7- مسند أحمد: الإمام أحمد بن حنبل المتوفي 241 ھ دار الفكر بيروت.

8- المصنف لابن ابى شيبة: الامام عبدالله بن محمد بن ابى شيبةالمتوفى 235 ھ دار الفكر بيروت.

9- سنن الدارمي:الامام الحافظ عبدالله بن عبد الرحمن الدارمى السمرقندى المتوفى255 ھ دارالكتاب العربى.

10-المستدرك: امام محمد بن عبد الله حاكم المتوفى405 ھ دارالمعرفة.

11-حليه الاولياء: امام حافظ ابونعيم اصفهاني المتوفى430 ھ دارالكتب العلمية.

12- شعب الايمان: امام ابوبكر احمد بن حسين بيهقى المتوفى 458 ھ دار الكتب العلمية.
13- مراٰة المناجيح: مفتى احمد يار خان نعيمى 1391 ضياء القران.
14- كتاب الزهد:الامام عبدالله بن مبارك مروزي المتوفي 181 ھ دار الكتب العلمية.
15- كتاب الزهد: الإمام أحمد بن حنبل المتوفي 241 ھ دار الغد الجديد.
16- كتاب الزهد: الإمام وكيع بن الجراح المتوفي 197ھ مكتبة الدار المدينة المنورة.
17- كتاب الزهد: الإمام ابو داؤد سليمان بن الأشعث السجستاني المتوفي 275 ھ دارالمشكاة للنشر والتوزيع حلوان.
18- كتاب الزهد الكبير:امام ابوبكر احمد بن حسين البيهقى المتوفى458 ھ مؤسسة الكتب الثقافية.
19- تاريخ مدينة دمشق: لابن عساكر المتوفي 571 ھ دار الفكر.
20- كتاب التاريخ الكبير: الإمام أبو عبد الله محمد بن إسماعيل البخاري المتوفي 256 ھ دار الكتب العلمية بيروت.
21 سيراعلام النبلاء: الامام شمس الدين محمد بن احمد بن عثمان الذهبى المتوفى 748 ھ دار الفكر بيروت.
22- صفة الصفوة: ابو الفرج ابن جوزي المتوفي 597 ھ دار الكتب العلمية.
23- فيضانِ سنّت:امير اهلسنت ابو بلال محمد الياس عطار قادري رضوى دامت بركاتهم العالية المكتبة المدينة.

फ़ेहरिस्त

याद दाश्त.....03
''सीरते अबू दरदा'' के 12 हुरूफ़ की निस्बत से इस रिसाले को पढ़ने की ''12 निय्यतें''.....04
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत.....05
सीरते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ.....07
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं.....08
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वा'दा.....10
सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ और घर का म-दनी माहोल.....10
सय्यिदुना अबू दरदा की शहज़ादी की शादी.....11
लड़का कैसा होना चाहिये ?.....12
सय्यि-दतुना उम्मे दरदा की दुन्या से बे रग़बती.....13
म-दनी माहोल की बहार.....14
सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का शौक़े इबादत.....17
शौक़े इबादत में तर्के तिजारत.....17
सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की दुन्या और माले दुन्या से बे रग़बती.....19
जिन का माल उन्ही पर वबाल.....23
भलाई किस में है ?.....23
सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की माल से नफ़रत.....24
इस्लाहे उम्मत का जज़्बा.....24
दा'वते इस्लामी और इस्लाहे उम्मत का म-दनी जज़्बा.....25
सय्यिदुना अबू दरदा और नेकी की दा'वत का जज़्बा.....28
दुन्या हलाक व बरबाद करने वाली है.....32
क़ौमे आ़द के तर्के की क़ीमत.....34
वीरान इमारतों से इ़ब्रत.....34
अस्ली घर.....35

पुल सिरात़ से गुज़रने वालों के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़.....36
सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का ख़ौफ़े आख़िरत.....37
लम्हा भर ग़ौरो फ़िक्र करने की फ़ज़ीलत.....37
रोज़े आख़िरत सब से ज़ियादा ख़ौफ़ वाली बात.....37
कोई सुब्ह़ जाता है तो कोई शाम.....40
सय्यिदुना अबू दरदा की तीन मह़बूब चीज़ें.....40
सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के नज़्दीक आ़लिम कौन ?.....41
सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की इ़ल्म से मह़ब्बत.....44
सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ और नेकी की दा'वत.....44
''नेकी की दा'वत'' के ﴾10﴿ हुरूफ़ की निस्बत से सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मन्क़ूल ﴾10﴿ म-दनी फूल.....47
सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की नेकी की दा'वत से मह़ब्बत.....49
ईमान की ह़लावत.....49
गुनहगार से नहीं, गुनाह से नफ़रत.....49
म-दनी मह़बूब की ज़ुल्फ़ों का असीर.....51
सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के ''नेकी की दा'वत'' पर मुश्तमिल दो मक्तूब.....53
मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या.....56
सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की करामात.....58
सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की दुआ़.....59
बे मिसाल जन्नती ने'मतें.....60
माख़ज़ व मराजेअ़.....61
फ़ेहरिस्त.....63